।। नमः शिवाय।।

# पंचम अध्याय

## शिव शक्ति कथा ;देव खण्डद्ध

अहं ब्रह्मा च शर्वश्च जगतः कारणं परम्।
आत्मेश्वर उपद्रष्टा स्वयंदृगविशेषणः।।
आत्ममायां समाविश्य सोऽहं गुणमयीं द्विज।
सृजन रक्षन् हरन् विश्वं दध्रे संज्ञां क्रियोचिताम्।।
तस्मिन् ब्रह्मण्यद्वितीये केवले परमात्मनि।
ब्रह्मरुद्रौ च भूतानि भेदेनाज्ञोऽनुपश्यति।।

## ध्यान

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखः,
विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी
जनयन्देव एकः।।1।।
तमीश्वराणां परमं महेश्वरं,
तं देवतानां परमं च दैवतम्।
पतिं पतीनां परमं परस्ता,
द्विदाम देवं भुवनेशमीड्यम्।।2।।
यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च,
विश्वाधिपो यो रुद्रो महर्षिः।
हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं,
स नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु।।3।।

हे विश्व आकार आकाश भूतल,
सब तत्व धारी निर्माणकर्त्ता।
अंतः प्रवासी हो मुक्ति काशी,
माया महेश्वर को नित नमन है।।
हे ईश ईश्वर तुम आदि अन्ता,
ब्रह्माण्ड स्वामी सब लोक देवा।
प्रकाश दाता तिमिरान्धनाशक,
ऐसे महादेव को नित नमन है।
सुर आदि मानव उत्पत्ति रक्षक,
जो आदि प्रलय गर्भस्थकर्त्ता।
विज्ञान दाता भव भीति त्राता,
आधार जीवन शिव पद नमन है।।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

नमः शिवाय नमः शिवायै

# शिव शक्ति कथा

## पंचम अध्याय ;देव खण्डद्ध

ॐ नमः शिवाय

मंगल वन्दना

देवकी नन्दाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो कृष्णः प्रचोदयात्।
भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो योनः प्रचोदयात्।

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।1।।
ईशानः सर्व विद्यानामीश्वरः सर्व
भूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा
शिवो मे अस्तु सदा शिवोऽम्।।2।।
तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।3।।
अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः
सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।4।।
वामदेवाय नमो जेष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः।
कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय।
नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः
सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।।5।।
सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नाति भवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः।।6।।
नमः सायं नमः प्रातर्नमो रात्र्या नमो दिवा।
भवाय च शर्वाय चोभाभ्यामकरं नमः।।7।।
यस्य निःश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्।
निर्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थं महेश्वरम्।।8।।

त्र्यम्बकं यजामहे। सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योमुक्षीय मामृतात्।।9।।
सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमोऽस्तु।
पुरुषो वै रुद्रः सन्महो नमो नमः।
विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं जायमानं च यत्।
सर्वो ह्ये रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमोऽस्तु।।10।।
शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारकम्।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः।।11।।
वन्दे महानन्दमनन्तलीलं महेश्वरं सर्व विभुं महान्तम्।
गौरीप्रियं कार्तिकविघ्नराजसतुद्भवं शंकरमादि देवम्।।12।।

अगुण सगुण आनन्दमय, वसुधा प्राण प्रकाश।
अकल अगोचर अविचल, रूप शंभु सुखराश।।1।।
शीश गंग अर्धांग उम, षटज गजोमुख साथ।
नंदी भृंग सेवी सहित, देखि मुदित जग नाथ।।2।।
चिर ते सोचत देव ऋषि, शंकर आवन हेत।
सो आशा पूरण करिय, लै कुल कृपानिकेत।।3।।
द्वादश ज्योतिर्लिंग भव, महिमा अगम अखण्ड।
विश्व बीच व्यापित मिलै, शंकर तेज प्रचण्ड।।4।।
ऋषि हिम वासी करि विनय, हाथ जोरि शिर नाइ।
भयो जनम जीवन सफल, परे नाथ पग आइ।।5।।

सुनहु विनय कैलास पतीश्वर। शिवा समेत प्रभू जगदीश्वर।।
वन्दउं गण नायक गज देवा। करि षटमुख नंदी पद सेवा।।
पाइ दरस सोहा हिम धामा। मंगल स्वर गूंजे अविरामा।।
शिव सत रूप जगत परमेश्वर। जय जय परम ब्रह्म सरबेश्वर।।
जय जय नाथ निरंजन स्वामी। निराधार हर अन्तरयामी।।
नाथ अनन्त प्रबल सम्पन्ना। मंगल शान्ति रूप प्रसन्ना।।
परमानन्द निरन्तर जयजय। कर्त्ता उत्पत्ति कारन परलय।।
जय सदृश हर हर शिव वैभव। जया मेव जय माय जया भव।।
रक्षक भक्षक भव त्रय हारी। रूप देव त्रय ताप निवारी।।
आप बनेउ योगी जन जाटा। जदपि सुरक्षक लोक विराटा।।
ऊंच नीच सब होहिं पुनीता। पाइअ देव शिवा शिव नीता।।
परमाराध्य विनाशक शूला। नमः शिवाय शान्ति सुख मूला।।
महादेव आनन्द प्रदाता। प्रेम सुधानिधि वसुधा त्राता।।
शूद्र गंवार अधम सुर निश्चर। बनि शरणागत लहत महावर।।
चिंता भस्म तन अदभुत योगी। आदत करन गृही सुख भोगी।।

वर्णाश्रम बल देवाचारा। सम तुम्हरे को जग उद्‌गारा।।
गृही तपोवन मनुज सुधारन। धरा धाम बसि युग निरमारन।।
आन न कीन करन नहि आशा। भांति शिवा शिव लोक प्रयासा।।
बनु सो पुर कैलास नुरागी। गिरिजा गृह लीलापन त्यागी।।
वानप्रस्थ महिमा उद्‌गारन। लीन्ह महेश विविध अवतारन।।

सृष्टि मूल गनि शिव विदित, लिंग प्रगट पहिचान।
घोर अघोर मृड रुद्र भव, नाना नाम बखान।।6।।
लिंग द्वादश अवतार सम, अष्टमूर्ति मुख पांच।
तबहूं नाना अवतरण, शास्त्र वाङमय बांच।।7।।

आप अजन्म सगुण अविनाशी। माया पति माया बस बासी।।
आपु प्रकृति अधीने काया। करि अवतरहिं बले युग माया।।
चिन्मय दिव्य अलौकिक करनी। रहहीं करत देत सुख धरनी।।
जन्म कर्म जीवन प्रभुताई। परसहिं लोक सबै हित तांई।।
तेहि अवतरण भाखु जग लीला। प्राकृत नाहि होत गुण शीला।।
प्रभु अवतार हेतु जेहि होई। इदमित्थं कहि जाइ न सोई।।
जग हित हेतु प्रयोजन जैसे। हरि अवतरण मिलत जग वैसे।।
ऋषि देवर्षि महर्षि मनीषा। पावहिं देव प्रजा पथ दीसा।।
नाहि बुढ़ाय नियम अवतारा। भले बदलु युग कुल परिवारा।।
जेतिक हितकर सृष्टी ढांचा। ताहि आप गिरिजापति रांचा।।
नारि पुरुष अध नारि स्वरूपा। लीला गुण विष अमृत रूपा।।
कृपा नाद कबहुं बनि बसने। प्रगटेउ कबहुं नाम गुण नमने।।
कला अंश पूरण आवेशा। जग सब रूप धरेउ सर्वेशा।।
जड़ चेतन सब रूप संवारे। लेहिं अवतरण जग करतारे।।

सफल होत नाही कबहुं, जग नकली अवतार।
जैसे पौण्ड्रक भेद भय, दीन्हेउ कृष्ण उघार।।8।।
जगत जीव अन्तर ह्रदय, होवत शिव अवतार।
अदभुत महिमामय प्रणव, जाहिं जपत संसार।।9।।

वेद पुराण देव ऋषि बानी। ओंकार ईश्वर तन मानी।।
प्रणव साक्षात ब्रह्म रूपा। तारण तरण जाल भवकूपा।।
जग अवलोकत अक्षर रूपा। पर गुण महिमा शक्ति अनूपा।।
ठांव प्रयोजन आने नाही। ईश्वर नाम रूप जग माही।।
करइ न अक्षर दूज मिलापा। घटइ बढ़इ न प्रणव प्रतापा।।
अन्तर बाहर एक प्रभाऊ। नाही होइ क्षरित गुन गाऊ।।
होइ न काजे दूज प्रयोगा। हेतू ध्यान करन्ह जग योगा।।

अक्षर प्रणव अक्षर रूपा। अक्षर आन न इहि अनुरूपा।।
अक्षर आन कथहिं प्रभु नामा। तिन उपयोग विविध वसुधामा।।
महामंत्र जग अक्षर मेले। पर बिन प्रणव नाहि फलेले।।
दैवी शक्ति जितइ जग मांही। होहीं सिद्धि प्रणव बल बांही।।
तीनों जीवन देह सुधारक। वेद अग्नि त्रय देव विचारक।।
प्रणव माया मुक्ति प्रदाता। सिद्धि सुधारक शक्ति विधाता।।
जित जग जीव जियत लै प्राना। प्रणव उचारहिं भले न जाना।।
आपु जथा तथ डारि प्रभाऊ। अक्षर तीन शिवम गुण दाऊ।।
मुख जापे संयम बल राखे। प्रणव स्वाद शक्ति जग चाखे।।
योगी गृही तपस्वी भोगी। प्रणव जप सबु हितोपयोगी।।
ओंकार बल ब्रह्म प्रदाता। जीवन हेतु भांति पितु माता।।

हिरण्य गर्भ अनुरूप भव, मानव आनन होत।
तामें प्रणव नाद ते, उपजु सुधामय स्रोत।।10।।
बार बार प्रणव जपन, रांचत शिव अवतार।
प्रथम वतारण शंभु कै, जग मा इहि प्रकार।।11।।

ले मुख मनुज प्रणव करि जापा। शिवम शक्ति ता तन उर व्यापा।।
परम सरेख नाद अवतारा। सहज प्रथम पावन मय धारा।।
दैहिक चक्र जागहीं सगरे। प्रणव नाद सुनिय मुख अखरे।।
करइ तिमे शिव शक्ति बिहारा। मांनि मूल पुर मूलाधारा।।
सहस्त्रार तक जेतिक ठांऊ। बनु विश्राम धाम तेहि ताऊ।।
सकल चक्र अपने अनुसारे। बनहीं ज्ञान जगावन वारे।।
महिमावान बनै तन तेकर। दैहिक चक्र जागहीं जेकर।।
लेकर मूल सहस्त्रारे तक। विचरि शक्ति शिव मुख सांचे बक।।
देह मनुज बनु देव समाना। नाद वतार प्रथम अनुदाना।।
गुण गंगा व्यापइ तन ताके। तीरथ शकति बसहिं संग वाके।।
ता महिमा जग पसरु अकूता। देहीं आगम निगम सबूता।।
दिव्य दृष्टि पावइ नर सोई। तेज ओज आकर्षक होई।।
अन्तर शिव बाहर मनु गाता। बनु ताते समयुग दिन प्राता।।
प्रणव जाप नाद अवतारन। नर नारी सब ता अधिकारन।।
नाद वतारन बनु मुख जाके। जीवन जनम अकारथ ताके।।
निज प्रकृति अनुसार महेशा। नाद वतारेउ देहिं हमेशा।।
शिवं पूर्ण धीमहि रूपा। जहां तहां सुख सर्व स्वरूपा।।
शंकर गुण तेहि गात विराजे। लय रचना तीनउ गुण छाजे।।
नाद वतारण साधि विधाता। पाइअ ज्ञान सृष्टि निर्माता।।

प्रणव प्रभुता नापि न जाई। जप तप कोउ न इहि समताई।।
आपु उतरि भव आन उतारै। पीढ़ी सात तलक कुल तारै।।
जेहि उर शंकर नाद वतारा। ता महिमा वरनै को पारा।।
विश्वरूप शिव अन्तरयामी। जेहि उर उतरु तिमे का खामी।।
सत्यानन्द स्वरूप अनन्ता। विश्व रूप वसुधा भगवन्ता।।
उत्पत्ति रक्षक बल संहारी। ओउम जाप साधे नर नारी।।
बल बुधि विद्या शील स्वभाऊ। धन वैभव यश तेज उछाऊ।।
सकल बढ़ै उपजै सुख नाना। प्रणव वतार करन जिन जाना।।
करनी कर्म अलौकिक ताके। नाद योग सोहत उर जाके।।
जग जप नहि कछु प्रणव समाना। वरना सुर ऋषि शास्त्र पुराना।।

नहि प्रणव वर्णात्मक, ध्यान आत्मक रूप।
आकृति वर्णन शास्त्र करु, आपु ज्ञान अनुरूप।।12।।
व्यक्त अव्यक्त चिच्छक्तिमय, मुक्ती प्रद अधमात।
विन्दु नाहि वाणी विषय, नाता जीवन गात।।13।।
तीर आत्मा ओउम् धनु, वेधत भय प्रतिकूल।
सत्य असत्य पहचान दै, करु त्रिदेव अनूकूल।।14।।

जग जित नाद प्रणव अनुहारी। सोई देहिं शकति अवतारी।।
प्रणव वेद सार आधारा। लोक नाद स्वर विविध प्रकारा।।
जेहि स्वर उपजु पीर पतनाई। बसहिं नाद तेहि बड़ असुराई।।
विश्व विधाता ब्रह्मा रूपा। तेहि शिव मानत सुत अनुरूपा।।
तासु व्यवस्था कारज भारा। होन सुभल शिव ढेर संभारा।।
प्रणव प्रथम जापि विधाता। लह संरक्षण सम पितु माता।।
बार बार शिव कृपा दृष्टी। पाइअ ज्ञान विरांचन सृष्टी।।
इत जीवन भर प्रणव जापा। लहत शक्ति बल शिव प्रतापा।।
सृष्टि योग जब भयो विधाता। होन एक ते अनगिन गाता।।
इच्छा सृष्टी साधन हीना। मात पिता सहयोग विहीना।।
रांचन विधि कहुं नाहि विलोका। रह अनिवार जाइ नहि रोका।।
लै अइसन महं प्रणव सहारा। अन्तर ज्ञान कछुक उद्गारा।।
समरथ कछुक विधाता जानी। सृष्टी हेतु करिय अगवानी।।
जड़ चेतन भल अनभल खानी। रचिय जौन कुछ नाहि ठिकानी।।
हारि थके न चलिय चतुराई। गयउ बैठि सिर हाथ लगाई।।
तर्क वितर्क करिय मन ढेरा। तब तेहि अन्तर प्रणव प्रेरा।।
शिव ध्याइअ जप तप ओंकारे। और कछुक दिन इहि प्रकारे।।
तबै समस्या कै निस्तारन। विधना पाउ हेतु निरमारन।।

सूझ पाइ प्रणव जपन, राखि ध्यान अखिलेश।
विधना मनसा लोक हित, भै तप महं लवलेश।।15।।

जापन ओउम विधाता लागे। लिंग रूप महिमा अनुरागे।।
तप अवलोकि विधाता केरे। बाल रूप धरि प्रगटेउ नेरे।।
बाल रूप शिव मनुजाकारा। भाव भरे सहयोग सहारा।।
देखि विधाता तेहि चकराने। इहि शिव रूप ते रह अनजाने।।
लोहित श्वेत वर्ण शिख धारी। ज्योति दिखानि शंभु अनुहारी।।
निज मन विधना बहुत विचारे। शिव बजाइ नहि कोउ संसारे।।
सोई रूप धरहिं बहु ढंगा। देन ज्ञान मोहि सृष्टि प्रसंगा।।
कारन प्रगटा सद्य कुमारा। सद्योजात नाम गा धारा।।
नाइ शीश दोऊ कर जोरे। करि विधि वन्दन मुद मन घोरे।।
रांचन सृष्टी ज्ञान सिखावन। करिय बाल सो आप दिखावन।।
आप नुहारे चार कुमारे। विधना सन्मुख करिय तयारे।।
नाम सुनन्द बताइअ नन्दन। विश्वनन्द चौथा उपनन्दन।।
सब शिव रूप ब्रह्म सहयोगी। विरचन सृष्टि विधा उपयोगी।।
लागे रहन विधाता साथे। लै सृष्टी रचना मन माथे।।
मनुज रूप शंकर अवतारा। सद्योजातम प्रथम बारा।।
जेहि विधि बनइ सृष्टि निर्माना। देहि ज्ञान सो कृपानिधाना।।
आवा ज्ञान विधाता ह्रदय। मानव रचना पोषण विधि लय।।

टेढ़ मेढ़ अक्षर लिखत, जौ प्रथम शिशु जात।
तानुसार विधना रचन, दिन सृष्टी शुरुवात।।16।।

सृष्टी ज्ञान विधाता अन्तर। लाग यथावत बढ़न निरन्तर।।
करहिं बनावन नीक प्रयासा। सम शिशु स्थिति होइ विकासा।।
ज्यों ज्यों सृष्टि विधाता रांचइ। मिलइ दोष तौ पुनः सवाचइ।।
कछु बनि जाइ बनै कछु नाही। कछु केस विरचन धरु मन मांही।।
नाना संशय सूझ समेता। सृष्टि रचहिं भजि कृपानिकेता।।
सृष्टि काज नहि खेल सधारन। विधि पापड़ बेलेउ बहु बारन।।
नाना भांति जीव आकारा। रखन्ह परस्पर मेल विचारा।।
तालमेल जब न अस सूझइ। तौ तप करि शिव शक्ती ढूढइ।।
बेर दूज जौ व्यापी बाधा। प्रणव साधना तौ पुनि साधा।।
तप विलोकि शंकर हरखाये। बाल रूप धरि सन्मुख आये।।
देखि विधाता लेइ पहिचानी। मिलइ बेश इहि मोहि शिव दानी।।
सो गुरु रूप सिखावन वारे। मानि नमन करि विविध प्रकारे।।
बाल देह रह रक्त शरीरा। सोह लाल पट लगत सुबीरा।।

वाम देव ता नाम बखानी। विधना ज्ञान दीन्ह निज खानी।।
आपु नुहारे चारि कुमारा। वाम देव गढ़ि कीन तयारा।।
विरज विवाह भये विश्वभावन। नाम विशोक ताहि कहलावन।।
एक चारि रचि ज्ञान सिखावा। अब जैसे शिशु जाइ पढ़ावा।।
नयन दिखाइ बताइ विधाता। वाम देव भांती पितु माता।
लै इहि बेर सृष्टि विज्ञाना। जांनु सो विधि जो रहा न जाना।
पुनः सृष्टि कारज शुरुवावा। नाना योनि शरीर बनावा।।
चिन्ता करहिं विशेष प्रकारे। सृष्टी वृद्धि हेतु मुख चारे।।
जहां विरांचन बाधा बाढ़इ। ज्ञान हेराइ विकलता गाढ़इ।।
सब तजि लाइ श्रद्धा विश्वासा। भजइ ताहि जे देइ प्रकाशा।।
बेर तीज जब भयउ दुखारे। पूजिय शिव लिंग जपि ओंकारे।।

विधि सृष्टी आधार हर, करन विधा अनुदान।
सृष्टि विरांचन कारने, उपजइ बाल समान।।17।।

दीन दयाल जगतपति स्वामी। सुर वन्दित शिव अन्तरयामी।।
सृष्टि सनेह सहित तप विधना। अवलोकत होहिंय शिव मगना।।
भांतिय पाछिल बाल कुमारा। अबकिउ बेर लिहिन अवतारा।।
बनि तत्पुरुष सृष्टि अनुकूले। नाशइ जौन विधाता शूले।।
साज बाज तन पीत प्रकारा। करत आपु रह प्रणव उचारा।।
तेज परम भुज बांह विशाला। प्रभुता समता लगु शिव वाला।।
आपन तेज ओज प्रगटाई। बाल रूप योगी उपजाई।।
एक दुइ तीन विरांचिय चारी। रचना क्रम विधि रहेउ निहारी।।
बाल पाठ सृष्टी विधि जोई। देखि विधाता ज्ञान संजोई।।
ज्ञान सम्पदा तप बल बूते। गै बनि सृष्टी शिवं प्रभूते।।
महामंत्र जपि नमत विधाता। इहि अवतरण विशिख सुखदाता।।
निज कारज खेती व्यवसाया। करन विधाता हाथ उठाया।।
नाना संशय नाना अन्तर। मिलहिं विरांचत भेद भंयकर।।
उपजइ विविध भांति जिज्ञासा। बने विफल मन होइ हिराशा।।
तब तब विधना करै पुकारन। रूप कोऊ बनु शिव अवतारन।।
चौथी बेर अघोर वतारा। रांचेउ शंभु विशिख आकारा।।
तन काला तन तेज कराला। यज्ञपवीत ताज रंग काला।।
चन्दन काला रंग निराला। रहा भंयकर सम महकाला।।
परम मनस्वी कारज काला। रह सब काला तेज उजाला।।
जथा शिष्य मन राखत गुरु भय। तेस बनि विधना कीन नमन जय।।
करउ कृपा प्रभु दीन दयाला। जानि अजान रचन भव वाला।।

सुनि विधि वन्दन रूप अघोरा। निज सम लाग बनावन छोरा।।
करनी कर्म विरांचन गाता। विधि समझाइ बताइअ नाता।।
एक नाइ अस चारि बनावा। गुण रहस्य सब आंखि दिखावा।।
शिव समान सब योगी भोगी। तासु नाम गा चारि प्रयोगी।।
विधि कुछ रचना पाइ अनूंठी। सोचु मने कुछ बल भा मूठी।।

चारि वतारण शंभु कै, सोलह रूप कुमार।
रचना विधि ब्रह्मा निरखि, लह गुण विविध प्रकार।।18।।

जेस गुण पाउ रचन तेस लागे। करि नव ज्ञान काज अनुरागे।।
विद्यारथि जेस कक्षा वारा। पाउ विकास गये प्रति वारा।।
विकसा त्यों त्यों ज्ञान विधाता। देखि वतारण शिव सुखदाता।।
नाना विधि सुधार परिवर्तन। करत विरांचिय आगिल नव तन।।
रही न सृष्टी आप नुहारे। इहि चिन्ता मन फिरत दुखारे।।
सृष्टि भावना तनय चाहना। चाह विधाता आपु साधना।।
बेर बेर विधि शंभु पुकारे। गयउ हारि तब तप चित धारे।।
करन लगे तप प्रणव जापत। बीत बरस कछु शिव पथ ताकत।।
बेर पांच तप ढेर विधाता। करि पाये दर्शन पितु माता।।
काज तपोव्रत स्वारथ जैसा। बूझि महेश धरहिं तन वैसा।।
विरचि देवपति तैसन माया। प्रगटु विधाता आगिल काया।।
सिंह नाद मय रूप भवानी। साज बाज तन शारद खानी।।
तानुसार नर रूप महेश्वर। सोह संग बनि ईशानेश्वर।।
शुभ्र वरण स्फटिक समाना। शोभित उज्ज्वल भूषण नाना।।
परम मनोहर सुन्दर काया। आदि अजन्मा आपु बनाया।।
मुद्रा भाव स्वरूप सिंगारा। लागत पूरक मनो विचारा।।
रह न जिते कछुक गुण शेषा। भागु विधाता मनहुं अन्देशा।।

निरनिमेष लखि मोद बड़, नमनेउ शीश नवाइ।
कर जोरे वन्दत चरन, महिमा अदभुत गाइ।।19।।

जेहि विधि होइ नाथ हित मोरा। देहुं सोई मांगउ कर जोरा।।
आपु जथा तथ सुन्दर काया। मानव देह विरांचन भाया।।
करि कृपा रचि आप दिखायउ। चित्र स्वरूप नयन बसि आयउ।।
केसस बनाइ सकब प्रभु सोई। साधन शकति थमाउ संजोई।।
तन नर नारि स्वरूप महेशा। गुरु अनुरुप देई उपदेशा।।
आपु नुसारे चारि कुमारे। देवन सृष्टी रूप संवारे।।
एक रांचि पुनि दूज बनावा। तीन चारि तक रांचि दिखावा।।
मुण्डी जटी शिखण्डी रूपा। अर्धमुण्ड परु नाम अनूपा।।

साधन शकति ज्ञान विज्ञाना। अनुसारे शंकर अनुदाना।।
योग मार्ग विद्या गुन गावत। बेर बेर शिव ब्रह्म पढ़ावत।।
करहिं परंगत सृष्टिय काजा। रांचन भांती भांति समाजा।।

पंच वतारण शंभु कै, पंच तत्व वरदान।
जड़ चेतन अन्तर सबै, दीन्ह विधाता प्रान।।20।।
लय स्थिति पालन करन, सुख दुख भाव विचार।
देन विधाता जग पसरु, भै सृष्टी विस्तार।।21।।

सृष्टी ज्ञान चाह अनुसारा। दीन्ही शिव जब लेइ अवतारा।।
राखिय मांग विधाता वैसे। उपजिय रही समस्या जैसे।।
सब अवतारण सीख सिखावन। रचिय महेश विरंचि दिखावन।।
शिव पंचानन अदभुत रूपा। ध्याइ रचिय विधि सृष्टि स्वरूपा।।
तिते चतुर्दिक परसत ज्ञाना। जिते रहहि सुर नर अनजाना।।
पाछु दिशा गुण सद्योजाता। वाम देव रख उत्तर नाता।।
दक्षिण प्रभुता देत अघोरा। छबि तत्पुरुष पूर्वे ओरा।।
ऊर्ध्व नाद नभ गुण ईशाना। करहिं निरन्तर विधना ध्याना।।
पाइअ अदभुत बल सफलाई। कहं के दूज जगत विधि नांई।।
पांचो रूप पचासन भटकन। करहिं दूरि दै भल परिवर्तन।।
जे जग ध्यावइ छबि पंचानन। तीन काल गति पावइ जानन।।
शिव ऊपर मुख शिव गुण धारी। चारिउ मुख गुण शक्ति पसारी।।
चारि वेद विज्ञान विधाता। मोक्ष प्रदायक सृष्टि प्रदाता।।
शिव पंचानन गुण बल बूते। राचिय विधना सृष्टि अकूते।।
जेहि जेस रचेउ सोह तेहि खानी। परम सुखी मिलु न कोउ हानी।।
पर नहि होइ ताहि विस्तारा। अन्तर संशय दुखद अपारा।।
केहि विधि बनइ निवारण एही। बनु चिनता चिन्तन विधि देही।।

विधि विपदा इहि भांति कै, सकु निवारि न आन।
जब जब भीजी आपु पर, करि शिव शक्ती ध्यान।।22।।

पुनि लागे तप करन्ह विधाता। जेहि ते पाछिल भूल निपाता।।
देहि कृपा तेहि कृपानिधाना। जे ध्यावइ जग हित कल्याना।।
विधना स्वारथ बूझि महेश्वर। तप अवलोकि महान विशेषर।।
पूरण होइ मनोरथ जैसे। प्रगटइ शंभु आपु बनि वैसे।।
अबकी बेर बेश अदभूता। नर तन आध आध तिय रूपा।।
अस तन रचि प्रगटे विधि आगे। तौ निज ध्यान विधाता त्यागे।।
अध नर नारि वदन अवलोके। विधि भ्रमे का माया धोके।।
बुद्धि हेरानि आपु चकराने। अस निरखत जेस पथिक भुलाने।।

शिव मानब उपजा सन्देहा। गनउ दूज तौ ज्ञान न तेहा।।
भयउ दरस यदपि तप कारन। इहि ते मानिय शिव अवतारन।।
बनेउ समर्पित रूप निहारी। धन्य बखानत नमन उचारी।।
लेटि धरा साष्टांग प्रनामे। विधना करिय धीरता थामे।।
धन्य धन्य महिमा प्रभुताई। बेर बेर तन भिन्न बनाई।।
बूझि अधीर विकलता संगे। कर परसा शिव गुरुता ढंगे।।
दशा नुसारे आशिष वचना। साहस शब्द सुनाइअ अपना।।
उठि विधना कर जोरि निहारेउ। फूट वाक न चाह विचारेउ।।
दशा विलोकि दयानिधि स्वामी। भव दुख हारी अन्तरयामी।।
बूझि तपोधन स्वारथ सिद्धी। सोचि निरन्तर रचना वृद्धी।।
सकल बूझि विधि मनगति जानी। गुरु अनुरुप बोलु शिव बानी।।
रूप नारि नर जौन हमारा। बड़ अदभुत सृष्टी विस्तारा।।
ज्ञान भरा लखि बनु विज्ञानी। आपु मांनु सृष्टी निर्मानी।।
सब भव भूल मिटाउब अबकी। सरल ज्ञान गुन सृष्टि बढ़नकी।।
सब अव्यक्त स्वरूप सनातन। सीख सुनाइ महेश्वर आपन।।
सुनि उर उपजा धीर अपारा। रूप बोध विधना उर धारा।।
विधि बोले वन्दत मुख वाचा। आज आगु प्रभु मोहि सवाचा।।
बिना भयउ सृष्टी विस्तारा। लागति रचना भांति गंवारा।।
इहि चिन्ता विष विषद विशाला। को हरु तुम बिन दीनदयाला।।

विनय वचन ब्रह्मा कथिय, होन सृष्टि विस्तार।
जानि लोक हित काज भल, बोले जग रखवार।।23।।

जगत चराचर जे रचवाई। नारि पुरुष करि संग सगाई।।
आयउ देन ब्रह्म उपदेशा। सृष्टि वृद्धि बल चलन हमेशा।।
खोलि नयन त्रय कह त्रिपुरारी। दीखु विधाता मोरी वारी।।
हम दायें ते नर तन रांची। वाम अंग ते नारि विरांची।।
दोऊ एक देव तन अंशा। बाढ़हि इन तन उपजा वंशा।।
अस कहि शंभु स्वयं निरमारा। निज तन दांये पुरुष प्रकारा।।
तासु नाम मनु रूप बतावा। सृष्टि वृद्धि तेहि शकति थमावा।।
रांचि वाम ते नारी रूपा। नाम धराइअ ता शतरूपा।।
दोऊ विरचिय साथे शंकर। दीन्ह विधाता विपति हरन कर।।
इनहिं निहारेउ देव विधाता। दाम पुरुष वामे तिय गाता।।
इन दोउ बले होहु जग सफले। रचु नारी नर अब दिन अगले।।
काज तुम्हारहु मोहि पियारू। सृष्टी रूप सकल परिवारू।।
सुनि शिव बैन वदन प्रयोगा। विधना पाइअ सृष्टी योगा।।

लै शिव आयसु चलु पुर अपने। लागेव सृष्टि विरांचन अगने।।
रांचेउ ऋतु मौसम अनुकूले। कामादिक माया अनतूले।।
आपु तने विधि रचि नर नारी। दै मनु रूपा जिम्मेदारी।।
लागी चलन्ह मैथुनी सृष्टी। भै सब मनु शतरूपा दृष्टी।।
बाढ़न्ह लाग चराचर लोका। पाइअ मनु शतरूप गुणों का।।
बूझि सफल ब्रह्मा हरखाने। दीन्हेउ कर्म भार सब थाने।।
विधि लह मुक्ती विरचन काजे। बाढ़ु सृष्टि बनु विविध समाजे।।
मुक्ति प्रदाता विश्व विधाता। कह विरंचि शिव जग पितु माता।।

विश्व भजै शंकर सकुल, ब्रह्मा पूजिय नाइ।
सद्चित आनन्द रूप शिव, महिमा तूलि न जाइ।।24।।
पंचवतारण शंभु कै, अक्षर पांच प्रकार।
एक सृष्टि रचना करत, दूज देत भव तार।।25।।
नर नारी मिलि नारि नर, आज गढ़त जेहि ढंग।
तानुसार शिव देह ते, उपजेउ दोऊ अंग।।26।।
मनु शतरूपा आज लौं, सृष्टि बढ़ावत जात।
बिना समय फल फूल कहं, काहू संग दिखात।।27।।

भले सृष्टि विधि रांचिय नाना। पर रक्षण विधि ते अनजाना।।
शिव सो भार आप अपनाई। जथा ज्ञान दै विधि रचनाई।।
जे अध नारी नर अनुरूपा। रांचेउ आप मृत्युंजय रूपा।।
अदभुत वेश न जाइ बखाना। तानुरूप कोउ बना न जाना।।
जौन अजनमा रूप सनातन। करि सो वेश मृत्युंजय नातन।।
शकति जौन जग मृत्यु पछारे। रूप मृत्युंजय सो अवतारे।।
तेहि पद पूजिय प्रथम विधाता। करि विनय लखि अदभुत गाता।।
विश्व मृत्यु हर रूप मृत्युंजय। सत् चित् आनन्द सुधा सरसमय।।
दुर्गुण दोष विपति भय हारी। कुमति कुकाल कुभाव निवारी।।
रख लय स्थिति दोऊ रूपा। शंकर रचिय मृत्युंजय रूपा।।
छांह नभज कमलासन सोहत। वाम शकति जग रक्षण जोहत।।
शोभा संग को बरनइ पारा। रूप युगल शंकर अवतारा।।
गहि दुइ हाथ सुधा घट एके। दूज ओर दुइ ते घट लेके।।
दौ घट सुधा उड़ेलत वैसे। लोटा जल नहाइ जन जैसे।।
दुइ घट थामि युगल कर सोऊ। हेतू आगु स्व गोद संजोऊ।।
हाथ एक आशीष पठावत। तौ इक मुद्रा ज्ञान थमावत।।
इहि विधि आठ भुजा बल बांही। मूरति आठ रूप इक ठांही।।
कहुं कहुं अष्टमूर्ति अनुहारे। नाम विविध दइ कह संसारे।।

सुधा कलश भूषण छबि नागे। परसहिं मानव लोक सुभागे।।
तीन नयन शशि सोह सुमंगल। माला अक्षय कानन कुण्डल।।
जूट जटा गंगा शिर धारा। निज सुधात्व भूलोक पसारा।।
वक्ष कांध बल यज्ञ पवीता। ब्रह्म शकति प्रद भाव सुमीता।।
शोभा रूप मृत्युंजय तन की। सुनन श्रवन गुण पाठ पठन की।।
सुर मुनि मनुज सकल हितकारी। लोक काल भय बन्धन टारी।।
जौ संग सोह मृत्युंजय जापा। ताहि छांह गनु शिव प्रतापा।।

काम क्रोध मद लोभ तेहि, संयम ते सधि जात।
उपजत कुल सदबुद्धि लै, शिव कुल भांति सुहात।।28।।

सकल विकार बनै गुण धारा। माया मोह विविध प्रकारा।।
लिगांकार रचिय विधि सृष्टी। राखि शिवा शिव गाते दृष्टी।।
सृष्टी रांचन सकल प्रसंगा। नहि भल बिनु पूजे शिव लिंगा।।
प्रकृति पुमान तत्व दुइ शकती। ध्याये शिव सो शक्ति उभरती।।
तत्व पुमान लिंग कहलावत। रूप प्रकृति योनि पद पावत।।
विन्दु तत्व बनि लिंग स्वरूपा। योनी नाद सृष्टि अनुरूपा।।
पीठ प्रकृति लिंग आधारे। मिलि दोउ लिंग जगत निरमारे।।
अश्लीलता भाव जो राखइ। मूढ़ अधी ताको श्रुति भाखइ।।
रूप प्रकृति मेखला मिसरन। करहीं जे सत संग अनुसरन।।
ब्रह्म पियारू सो ब्रह्म चारी। आप शिवा शिव वचन उचारी।।
लिंग अर्चना शंकर पूजा। मनुज धर्म इहि भांति न दूजा।।
शिव नर प्रथम गौरी नारी। तासु अंश जगती नर नारी।।
अध नारीश्वर शंभु शरीरा। लिंग पीठिका मेल गंभीरा।।
बनि अध नारी शंकर गाता। सृष्टि ज्ञान सो दीन्ह विधाता।।
जे नारी नर गढ़इ कुचारा। भोगइ नरक तासु परिवारा।।
कुल सदचार परसु जे अपने। व्यापइ शिवम कृपा तेहि वदने।।

शिव बसहीं सबके ह्रदय, ह्रदय देव ऋषि दीन्ह।
इहि ते मैथुन सृष्टि फल, सहज लोक जिव लीन्ह।।29।।

इहिते विषय धर्म अनुसारा। मैथुन नियम लोक निरमारा।।
जे कुभाव लखु ढंग अनीती। ताते नाहि विधाता प्रीती।।
सकल गुणी तन मनुज कहावा। देइ सब हर नहि शेष लगावा।।
बनि मानव करु नीक कमाही। ताहि भोगु रखु सोच अगाही।।
मानव तन अनमोल प्रसादा। साधि अगुन न करु बरबादा।।
मानव जनम कर्म फल एही। गहहि सुकर्म प्रभु पद नेही।।
व्यर्थ न सोच जनम इहि बारे। सकल दोष इहि वदन उबारे।।

भोगेन काव काव रह शेषा। राखहु इहि तन ध्यान हमेशा।।
मानव जाति कर्म अधिकारी। कर्म विवश विष्णु त्रिपुरारी।।
रक्षक कर्म जौन सुख आना। सो अनुकूल करत भगवाना।।
प्रेम सनेह समर्पण पाये। मिलहिं प्रभू बिनु दाम लगाये।।
ऊंच नीच जांचइ नहि जाती। जीव सकल मानै सुत भांती।।
शिव पूजा विधि सरल प्रकारा। लिंग रूप प्रतिमा साकारा।।
शिव लिंग पूजि पाउ फल सोई। परसत तीन साधना जोई।।
जीवन जन्म जीतु जे आपन। इच्छा मृत्यु लगे तेहि साथन।।
इच्छा मृत्यु अमरता दाया। लेइ सहज नर नारी काया।।
इच्छा मृत्यु पाउ तप धारी। पुनि काया लह चाह नुहारी।।

मानव तन आपन शकति, शंकर दिहेउ बसाय।
करि वन्दन भगती चरन, सबही लेय जगाय।।30।।

इहि कारन शिव रूप विधाता। भाखि पितामह करि विख्याता।।
विद्या विश्व व्याकरण ज्ञाना। वेद सहित वसुधा अनुदाना।।
लोक रजोगुण प्रभुता पाई। भौतिक सुख मानव विकसाई।।
ईश्वर कृति जग मानव काया। पावइ सुधा रूप शिव छाया।।
ईश्वर प्रति कृति मनु शतरूपा। नारि सद्रूप पुरुष चिद्रूपा।।
जेहि विधि होइ लोक कल्याना। विरचु महेश सो ताना बाना।।
कारन नाना नाना नामे। कथहीं लोक करहिं शिव कामे।।
पंच वक्त्र शिव रूप किशोरा। गंगा धर गंगा रस बोरा।।
नयन तीनि नाशक तिमिरारी। स्वामी रूप सृष्टि नर नारी।।
पशुता ढहत पशूपति बनिके। धरि तन गृही मनुजता गढ़ि के।।
शिव सर्वज्ञ रुद्र अवतारी। परमात्मा रूप अविकारी।।
लोक सकल प्राणी पितु माता। पालक पोषक नाशक त्राता।।
भूत नाथ भारत भगवाना। बनेउ गृही जहं मनुज समाना।।
आपु भांति भारत भुंइ रांचिय। देह प्रतीक संगे इहि खांचिय।।
देव भूमि भव भारत धरनी। देव देव भव शंकर करनी।।
जेस शंकर तेस भारत रूपा। इते मृत्युंजय प्राण स्वरूपा।।
राम चरित भावत मन शंकर। भारत चरित भगति शंकर कर।।
सोह शशी माथे जग नाथे। तौ शशि शेखर भारत माथे।।
भारत धरनी कृषी प्रधाना। कृषि वाहन वृष शिव प्रिय माना।।
भूषण नाग सोह शिव गाते। अरि बल मर्दहिं भारत माते।।
पाउ सुरासुर शिव शरनाई। विश्व लोग तेस भारत धाई।।
भागीरथी भारती नाड़ी। शिव शिर सोह बहै जेस बाढ़ी।।

तपो ऊर्जा लोक महं, शिव समान नहि आन।
जे जीवन तपसी बनै, सोई देव समान।।31।।
आदि काल राजा सगर, साठि सहस सुत पाइ।
सबै कपिल मुनि शाप लै, दग्ध भै इक ठांइ।।32।।
ता कुल नृप दिलीप भै, तनय भगीरथ नाम।
गंगा लायेउ तप बले, तरहीं मनुज तमाम।।33।।
पतित पावनी जाह्नवी, शिव शिर शक्ति समेत।
बहहिं धरातल धार दै, धरनी धाम निकेत।।34।।
गंगा सम को मुक्ति प्रद, दीख परै जल रूप।
जापे दरसे आचमनेउ, तारहिं प्रजा भूप।।35।।

आगम निगम पुरान बखाना। देव कपिल समता भगवाना।।
वर्तमान जहां गंगा सागर। करत कपिल तप तेहि थल जाकर।।
साठ हजार सगर परिवारा। बल उन्मत्त गयउ तेहि ठारा।।
लागे करन कपिल अपमाना। दृष्टि कुपित मुनिवर जब ताना।।
गै बनि कोयल प्राण विहीना। बिन जल पाउ मौत जेस मीना।।
भांति शिला सोहे सब तांही। तिन सुधि लेन दूज भय खांही।।
दुरगति सहत गये बहु काला। तेहि कुल प्रगटु भगीरथ लाला।।
पुरखन दुरगति सुनि भा दूखा। चिन्ता छाउ लगै न भूखा।।
पुरखन तारन सोच समानी। मिली जुगुति नाही कोउ खानी।।
बूझि विधाता भव निर्मानी। विधि तप करन भगीरथ ठानी।।
विधना बूझि भगीरथ हाला। देखि घोर तप गै बहु काला।।
हरखे देन तपो फल चाहा। प्रगटेउ भागीरथे अगाहा।।
चाहत काव विधाता बोले। मांगउ वर देवइ दिल खोले।।
सुनि अस बैन भगीरथ हरखे। भवा मने तरहीं अब पुरखे।।

हाथ जोरि वन्दत नमत, बोलु भगीरथ बैन।
बरनिय पुरखन दुर्दशा, जेस बिताउ दिन रैन।।36।।
बूझि आप कर्त्तव्य भल, हम तप करिय तुम्हार।
देहु गंग जल आनि तुम, बनहीं पितृ उद्धार।।37।।
मांग भगीरथ विधि सुनिय, वचन कहेउ इहि ढंग।
गंग प्रवाहन लोक मंह, रोकन कठिन प्रसंग।।38।।
रोकन समरथ होउ जौ, तौ हम देहुं थमाय।
तारहु पुरखन आप तुम, लोक लोग सुख पाय।।39।।
जल प्रवाह अनरोक पै, चीरि धरा पाताल।
जाइ पहुंचि तौ मांगु तुम, होइ प्रविशि मुंह काल।।40।।

मुक्तिदायिनी गंगा का अवतरण

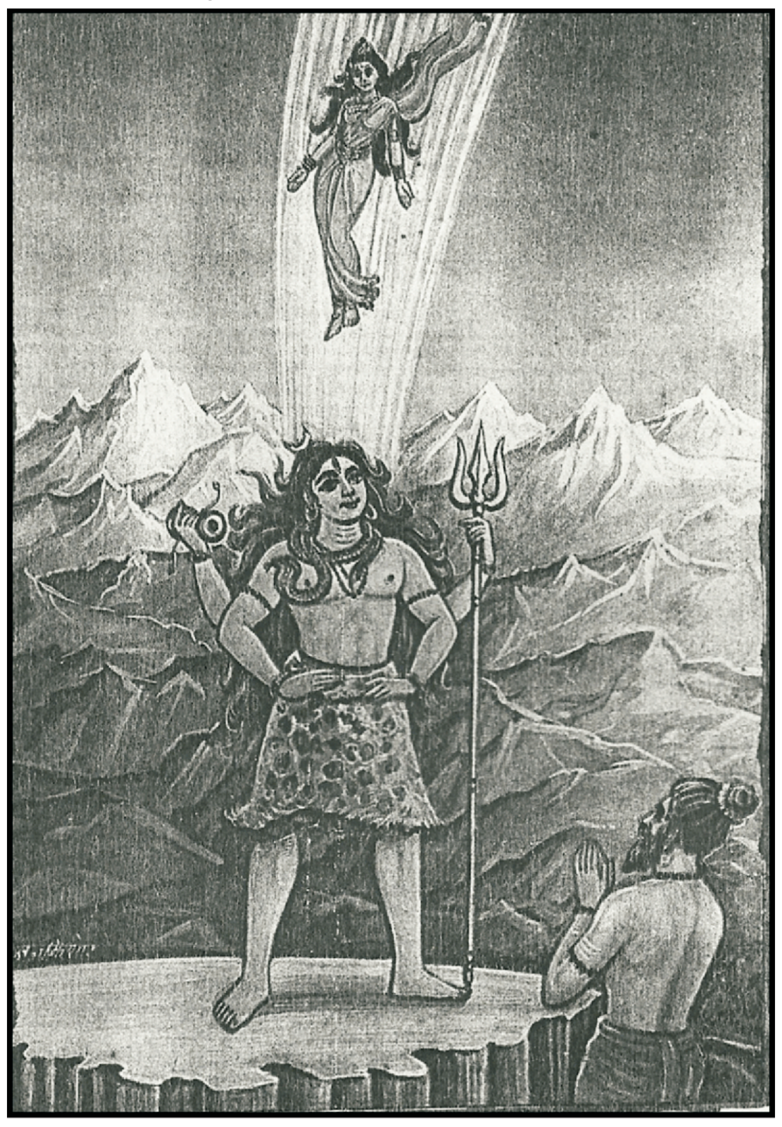

मातस्त्वं सुप्रसन्ना मे यदि त्वं शिवसुन्दरी।
तदा हरिपदाम्भोजान्निःसृत्यैहि धरातले।।
पवित्रां धरणीं कृत्वा प्रविश्य विवरस्यथलम्।
उद्धारय पितृन्पूर्वान्मुनिना भस्मसात्कृतान्।।
पितृणां यदि निस्तारं करोषि त्रिदशस्तुते।
तदाहं कृतकृत्यः स्यामेतन्मे वांछितं शिवम्।।
देवि गंगे जगद्धात्रि ब्रह्मरूपे सुरेश्वरि।
लोक निस्तारणार्थाय द्रवरूपे प्रसीद मे।।
तवाम्बुकणिकां भक्त्याध्यभक्त्या वापि यः स्पृशेत्।
सोऽपि मुक्तिमवाप्नोति गंगे देवि नमोऽस्तु ते।।

सुनु भूपति मानहु मम बानी। रोकन वेग संजोवहु आनी।।
तौ हम पुरउब मांग तुम्हारउ। होहु सफल आपन पित तारउ।।
लागे विधना आगु बतावन। बनन्ह सफलता कारज पावन।।
शिव समरथ जग देव न आना। भरु हामी तौ तुम लै जाना।।
भाउ भगीरथ विधना बाती। लगेउ करन शिव तप दिन राती।।
दाया सागर भगत हितैषी। कोऊ भजइ भले विधि कैसी।।
करत न देर लेत सुनि हाली। सर्वस परसि आपु रह खाली।।
तप बल बूझि भगीरथ केरे। प्रगटे शंभु आइ तिन नेरे।।
मांगु मांगु वर भाखेउ बानी। सुनत भगीरथ जोरे पानी।।
नावत शीश सुनावत वन्दन। कह वच विनय सगर कुलनन्दन।।
नाथ विष्णु पद पावन बूंदें। विधना आप कमंडलु मूंदे।।
तिन ते चहत आप कुल तारा। न प्रवाह कोउ रोकनवारा।।
सो जल विन्दु धार प्रवाहन। लेहु रोकि इहि चाह हमारन।।
नाथ वचन जौ करु स्वीकारा। लांउ पवित्रांगी जल धारा।।
सुनइ न सो जल वेग निवेदन। बिनु रोके करु धरनी भेदन।।
मिलइ न मोहि न तरु परिवारा। बिनु तारे तप व्यर्थ हमारा।।
मोसम अधी अनेकन लोका। दुरगति सहत विपति भवशोका।।
पावउ नाथ कृपा जौ थोरी। तौ गंगा सुख बह सब खोरी।।
मांग भगीरथ शिव प्रिय लागा। भरि हामी कह जा जल मांगा।।
रोकब सो जल वेग प्रवाहा। पुरउब आश तारु कुल दाहा।।
पुनि भागीरथ गै विधि पासा। चाहन गंगा कीन प्रयासा।।
जांनु विधाता रोकन वारा। छोड़न जल बूंदन स्वीकारा।।

पांव पखारा विष्णु कै, जल विधि राखु संजोय।
सुनि भगीरथ मांग पै, धरनि गिरायउ सोय।।41।।

बूदन्ह छुटत कमण्डल कोरा। वेगि बढ़ा सो गुना करोरा।।
पहुंचत ध्रुव चक्र शिशु मारे। लाग गवा बनि सत आकारे।।
पाउ बिन्दु जल बाह अपारा। नभ गूंजा स्वर हाहाकारा।।
ठांढ़ गगन सुर ताहि निहारत। होत चकित जिभ दांतन डारत।।
विष्णु वेग बल तिमे दिखाने। बिनु विरोध जल बिन्दु पयाने।।
तासु वेग अनमाप अकूता। जिमि नभ घन बुंद जाइ न कूता।।
सो जल राखु वेग अभिमाना। करब विरोधी धरनि धंसाना।।
पुरुष पुरातन अदभुत माया। नहि जग जांनु कोउ सुर काया।।
रोकन वेग गंग जल धारा। इत प्रस्तुत भव रांचन वारा।।
गाढ़ि त्रिशूल एक कर थामे। लीन्ह कमर कसि दायें वामे।।

परम मुदित डमरू डहकावत। चरने दोऊ धरनि दबावत।।
राखि आश गंगा जल आवन। रोकि ताहि भू लोक बहावन।।
आपु जटा शिव तइस बढ़ावा। जेस जल वेग नुपात दिखावा।।
जेस केउ हेतु लड़न्ह तइयारा। सावधान शिव ता अनुहारा।।
पुरउब भागीरथ अभिलासा। आपु मने शिव करिय विकासा।।

ठाढ़ भगीरथ जोरि कर, मन सुझात कछु नाहि।
काव करउ हम भांति केहि, विनती कौन सुनाहि।।42।।

उत करि गंगा हाहाकारा। धार सात मिलि एक प्रकारा।।
एक साथ भरि वेग महाना। गिरिय शंभु पर वज्र समाना।।
रहिय सोच हम परम विशाला। जाब चली शिव सहित पताला।।
पर शिव जटा अजब भव सागर। ताहि छुअत भा जल बल गागर।।
जटा प्रभाव सिमटि गै धारा। वेग हेरानेउ हाहाकारा।।
जंगल जटा गंग चकरानी। छोर न पावहिं फिरत भुलानी।।
घटइ पटइ न कटइ जट जंगल। पाउ न गंग लोक भव मंगल।।
विरचत दिवस बीति गै बरसन। नहि कोउ पाउ गंग जल दर्शन।।
गंगा जटा थाह नहि पावा। दौरी बिचरिय जोर लगावा।।
अता पता नहि आपु हेरानी। देखि दशा भई नृपति गलानी।।
पुरुष पुरातन भव निर्माता। जानत आप गंग उतपाता।।
होहीं गंग धीर नहि जब लौं। देन चहत नाही शिव तब लौं।।
आपु भगीरथ बहु घबराने। शिव तप करन लगायउ प्राने।।
जेस गिरि स्वर्ग खजूरे अटके। विपदा तइस भगीरथ खटके।।
नमः शिवाय ऊँ नमः शिवाये। लागे जपन्ह चरन चित लाये।।
जेहि विधि हरखहिं दीनदयाला। सोई विनय करहिं महिपाला।।
शिव मन करत गंग रखवारी। नयन दृष्टि रख सेवक वारी।।
होइ न थिर उत गंग प्रवाहा। पूर न इत भागीरथ चाहा।।
गति दोऊ जानिय शिव बाबा। जटा समेटिय दीन्हेव दाबा।।
भई सथिर गंगा महरानी। बूझिय सो गति शंकर दानी।।
आपन जटा निचोड़ी कर ते। बूंद रूप निकली जट घर ते।।
जित जल बूंद कमण्डल निकला। तित जल बूंद जटा इत उगला।।

तामें धारा सात बनु, पश्चिम तीन पधारु।
तइस तीन पूरब चलिय, गंगा दक्षिण वारु।।43।।

अलक जनम कारन जल वृन्दा। नाम पाउ सो अलकानन्दा।।
थकति थोर जल बह गति मन्दे। मन्दाकिनी कथिय सुर वृन्दे।।
शिव आयसु भागीरथ काजन। बाढ़ि चला जल धरनि विराजन।।

शैल हिमे पाइअ जेस राहा। तानुसार जल कीन प्रबाहा।।
आगु भगीरथ गंगा पाछन। हर हर करति चली दिन रातन।।
राह बनावत शैल बहावत। तेज मन्द सब चाल लगावत।।
तपसी जन्हु यज्ञ अवगाहे। संयोगन परु गंगा राहे।।
सो मुख गहिय निकारिय काने। नाम जान्हवी लोक बखाने।।
संग भगीरथ करिय पयाना। भागीरथी इते जग जाना।।
धरनि धाम जौ करिय प्रबासा। जग तेहि गंगा नाम बकासा।।
जेठे शुक ले दसमी वारा। नखत हस्त गंगा अवतारा।।
हरत पाप दश गंगा नीरा। दरसे परसे निवसे तीरा।।
जेहि पथ भागीरथ अपनावा। बाढ़त जल सो पथ चलु धावा।।
जहां कपिल मुनि आश्रम पावन। तहां भगीरथ करि ठहरावन।।
हाथ उठाइ दिखायउ गंगे। साठि हजारन पुरखन ढंगे।।
उभरि गंग जल भयउ अपारा। बोरा सबहि नहान नुसारा।।
लाग न देर तरेउ सब साथे। नमेउ भागीरथ जोरे हाथे।।
कपिल आश्रम फेरी कीन्हा। गंगा बास सिन्धु महं लीना।।

गंगा सागर नाम परु, जो नहाइ इक बार।
सकल पाप ता दग्ध बनु, नृप पुरखन अनुहार।।44।।
देव यक्ष गन्धर्व मुनि, देखेउ गंगा खेल।
गंग रसातल चलि गईं, जौ जल सिन्धु अमेल।।45।।
शिव शिर गंगा बास करि, लह महिमा अदभूत।
यशो गान गुण लोक महं, पाइअ सम अवधूत।।46।।

दरसन परसन गंग नहावन। करहि तीन तन जीवन पावन।।
अति अदभूत होइ नहि बरनन। गंगा जल महिमा मुख ग्रंथन।।
साधि सतोवृत्ति मति सदचारे। राखि श्रद्धा बसु गंग किनारे।।
आपु तारि तारहिं सो आना। लहि बल गंगे होइ महाना।।
पर हित भाव संकलप राखे। होहीं सांच सो जो कछु भाखे।।
गंगा अवगुण जारहिं जैसे। प्रभुता उदित होइ तन तैसे।।
नहि गंगा सम तीरथ आना। गंग भगत जग देव समाना।।
पाप उद्धारी भव दुख हारी। जयति जयति गंगा महतारी।।
कतहूं पाप जरइ नहि जासू। जारहिं गंग अइस अघ खासू।।
आयउ जे गंगा शरनाई। बाढ़िय लोक तासु प्रभुताई।।
गायत्री गंगा गौ गीता। आपु भांति करु आन पुनीता।।
जै जै जै गंगा महरानी। देवि रूप जग प्रगटु भवानी।।
धरनी गंगा नभे दिवाकर। रूप प्रत्यक्ष सुखी जग पाकर।।

गंगा सागर शीश शिव, गंगा सागर सिन्धु।
एक विरांचत गंगजल, एक लेत तेहि मुन्दु।।47।।

शिव स्वभाव सर्वस जग बांटन। जेस केउ गृही सवाचइ आपन।।
करहिं मुदित सो कृपानिधाना। जेहि विधि बनइ लोक कल्याना।।
पूरब काल बात इक बारा। करिय सुरासुर आपस रारा।।
गयउ हारि इन्द्रादिक योधा। बढ़ेउ असुर भय चहुं अविरोधा।।
जहं तहं सुरगण भागि लुकाने। गयउ इन्द्र कश्यप अस्थाने।।
कष्ट कथा कश्यप ते गावा। सुनत महर्षि परम दुःख पावा।।
शिव साधक कश्यप मुनिराया। दै आश्वासन धीर बंधाया।।
विविध सोच मुनिवर मन लाये। जाइ इन्द्र दुःख केस दुरियाये।।
शिव बजाइ दुख हरइ न आना। मुनिवर आप मने अस जाना।।
तुरत चलेउ कश्यप शिव नगरी। काशी धामेउ शंकर बखरी।।
करिय प्रथम गंगा स्नाना। पूजन अर्चन दइ शिव ध्याना।।
शिव लिंग थापि करन तप लागे। हेतू दरस भाव अनुरागे।।
बीत काल चिर दरस न पावा। भये चिन्ता तप और बढ़ावा।।
कश्यप मनेउ परम विश्वासा। शिव सम दूज न खलभय नाशा।।
जेहि विधि हरखहिं दीनदयाला। सो तप करबै भले विशाला।।
तपो कामना मनो भावना। कश्यप साध कठोर साधना।।

ठांव पांव इक गंग जल, श्रद्धा समर्पण बोय।
निराहार वन्दन नमन, कश्यप विविध संजोय।।48।।

घोर साधना मुनि शुरुवावा। भव भय हारी मन सो भावा।।
सूर्य रूप भगवन त्रिपुरारी। तुम्हीं प्रकाशक तिमिर विदारी।।
पाइ निशा खल विचरहिं जोई। चलि नाना उत्पात संजोई।।
तासु अनीति मनोरथ भाऊ। नाथ तुम्हीं करि सकु विफलाऊ।।
जबहिं निहारत तीजउ नयने। उपजत सबै मुखे मृदु बयने।।
आपु दुराइ कुकाल अनीता। फरत सबै मन सतपथ प्रीता।।
शरणागत जानत तन आपन। करु उद्धार दै ज्ञान प्रकाशन।।
विश्व पूज बनु जो कछु सेवा। सो हम करत बूझि महदेवा।।
केहि कारन नहि सुनत विनीता। दीनदयाल तुम्हीं जग हीता।।
मनुज सुरासुर ग्रह गति गामी। तुम सब स्वामी अन्तरयामी।।
विश्व श्वासंमय सर्व स्वरूपा। सब तुम जानत जग गुरु रूपा।।
मनोवांछित वर बल दाता। पालक पोषक नाशक त्राता।।
योगी रूप काज परमारथ। करत चलत पुरवत जग स्वारथ।।
तुम ते बाहर जीव न आना। कृपा चाह पद कृपानिधाना।।

मांगन कृपा जांउ केहि ओरे। नाहि जांनु प्रभु माया छोरे।।
बूड़त व्यथा उबारहु धाई। जौ लागउं शरणागत नांई।।
भूल हमार भले भव भारी। बनु तुम केसस स्वभाव बिसारी।।
का सुरता बिलखे जग ऐसे। तुम्हरे द्वार रोउ हम जैसे।।
करुणाक्रन्दन करुणा बानी। सुनत सहहिं न रोके मानी।।
परु जेस अवसर ता अनुहारे। नाहि बिलम्ब लेत अवतारे।।

अष्टमूर्ति विश्वनाथ सो, पंच तत्व प्रतिपाल।
सुनि कश्यप वंदन विनय, प्रगट भयो ततकाल।।49।।
कह अदेय कुछ नाहि मो, भाखहु अन्तर चाह।
सुनत मनोरथ पूर वच, कश्यप मने उछाह।।50।।

बूझि महेश मुदित सब खानी। कश्यप आपु सफल तप जानी।।
विनय सुनावत विविध प्रकारा। चरनन माथ लाइ बहु बारा।।
लह मुकती फल बल जग तारन। पुनि मुनि भाखु बुलावन कारन।।
नाथ सबल खल सुरन पछारे। तिन भय भीत फिरत दुख मारे।।
सुरन्ह व्यथा नहि जाइ बखानी। असुर अनीति सबै दुःख मानी।।
पीड़ित पीरा गो द्विज धरनी। छिपा न तुमते कहं लग बरनी।।
ऋषि मुनि सन्त स्वभाऊ एही। बनहीं प्रभु अवतरण सनेही।।
चाह मोरि बनु तनय हमारे। नाशहु देव व्यथा करतारे।।
बनहिं सुखी जेहि विधि सुर सन्ता। नाथ पाइ खोवउं सो चिन्ता।।
कश्यप मांग सुनत भगवाना। कहि तथास्तु भै अन्तरध्याना।।
व्रत उद्यापन तपो समापन। करि कश्यप घुमरे गृह आपन।।
कश्यप चाह वचन विरतन्ता। गयउ पसरि सूनिय सुर सन्ता।।
भगतन वत्सल दीनन भ्राता। अशरण शरण लोक सुख दाता।।
दीन्ह वचन अवतारण लेहीं। तेहि सुख सुधे बूड़ मन देही।।
देश देह दुःख व्यापत नाही। जौ सुख व्यापि जात मन मांही।।
उपजन शंकर आश निहारत। निशिदिन विनय वचन गहि आरत।।

देव प्रतीक्षा आप वर, पुरवन्ह कृपानिधान।
लेन जनम कश्यप भवन, करिय आप मन ध्यान।।51।।
कश्यप ते सुरभी उदर, गर्भ रूप शिव आय।
जन्मेउ ग्यारह रुद्र बनि, भव मंगल उपराय।।52।।

एकादश शंकर अवतारण। सुरन्ह समेत रूप जगतारन।।
लिंग मूर्ति प्रभु कृपानिधाना। पावन ज्योति नयन सदज्ञाना।।
देव तीन त्रय मंगल कारी। तीन ताप हर शिव अविकारी।।
लै अवतरण नुसारे आपू। पसराइअ मंगल परतापू।।

ग्यारह रुद्र जनमु जग जबहीं। शिव मय विश्व गयो बनि तबहीं।।
सुरन्ह विनय गूंजे सब ठारे। मंगल भाव कामना कारे।।
रुद्र एकादश सुनु जग जोई। दुर्गुण आपु दुरावइ सोई।।
व्यापा सुराचार जग मांही। भई असुरता निर्बल बाहीं।।
सर्वेश्वर महिमा अनकूता। लेत जनम घटु असुर प्रभुता।।
न अस भवा न होवन वारा। भा जेस एकादश अवतारा।।
आप बना भव शिवमय रूपा। कश्यप धन्य पिता अनुरूपा।।
जन्मेउ रुद्र करिय पय पाना। पाये तन सब शंभु समाना।।
माया शकति रूप अविनाशी। एक से एक निशाचर नाशी।।
बल विक्रम गुण तेज अपारा। महिमा रुद्र लगइ अनपारा।।
जेस जग तारी गंगा माया। तेस खल हारी रुद्रन्ह काया।।
सुनहीं रुद्र नाम जग जेई। त्यागि कुपथ सतपथ चलु तेई।।
दरसन परसन रुद्र निहारन। करन लाग खल वृत्ति संहारन।।
वर्जित करनी युग कलिकाला। रुद्र देह धरि हतिय कृपाला।।

रुद्र एकादश जन्म लै, सुरता दीन्ह उभारि।
सुर इन्द्रादिक लह विजय, खल दल भागे हारि।।53।।

जे शिव ध्यावत रुद्र उपासिय। पाउ सिद्धि अमृत गुण राशिय।।
पूरण होइ मनोरथ ताके। विध्न हीन भव रोग न वाके।।
ग्यारह रुद्र नाम भय हारी। शिव पुराण इहि भांति उचारी।।
अहिर्बुध्न्य शंभु भव चण्डा। भीम शास्ता पिंगल खण्डा।।
विरूपाक्ष अजपाद कपाली। नाम विलोहित जनमन माली।।
जे जेस नाम काज तेहि खानी। रह सब सत्य धर्म वृत्ति सानी।।
मानव काया लह सुरताई। जेहि ते मिलइ देव हरखाई।।
दस इन्द्री मन बुद्धि समेता। जासु सुभल सो असुर विजेता।।
लोक मनुज बनु प्रज्ञावाना। पाउ मान बड़ शास्त्र विधाना।।
सृष्टि व्यवस्था विधि अनुसारे। गै बनि भूतल स्वर्ग उतारे।।
रुद्र जाप जापिय जग लोगा। बनहिं निरोग लहहिं शतयोगा।।
मिला न जे सुख कोउ अवतारे। रुद्रयोग सो लोक पसारे।।
वृत्ति आसुरी मिलइ न हेरे। लागइ सत प्रवृत्ति चहुं फेरे।।
रुद्र भाव जंह पाउ विछोहा। विश्व विदित तहं अवगुन सोहा।।
पंच वक्त्र वसुधा निरमारी। महादेव जग पोषण कारी।।
लोक असुरता रुद्र बिदारत। भजहिं जबहिं जे वचने आरत।।
प्रभुता रुद्र बसिय सुर लोके। करु भव रक्षण नाशत शोके।।
जे सुर लेहिं धरनि अवतारा। रुद्र योग ते चाह सहारा।।

रुद्र रूप शिव लोक हित, लीला करहिं अनन्त।
विश्व व्यापी आनन्दमय, जासु आदि न अन्त।।54।।
षटमुख गजमुख ता तनय, गौरी प्रिय त्रिपुरार।
लोक हितारथ कारने, लेत विविध अवतार।।55।।

आप करहिं करवाइअ आना। जाइ न महिमा गुण पहिचाना।।
देव सभा लागी इक बारा। तिमे सन्त बड़ सनत्कुमारा।।
सुनन्ह कथा हरि बड़ जिज्ञासू। पुरवत जौन लोक अभिलासू।।
एक बार नाही बहु बेरी। होन कथा हरि वचन उकेरी।।
आउ सभा तेहि नन्दी काया। महिमा बूझि अलौकिक माया।।
सनत्कुमार मने भा एही। जानन्ह महिमा नन्दी देही।।
सो नन्दी ते वचन सुनायउ। केस शिवांस तुम्हरे तन आयउ।।
दुर्लभ शिव दर्शन जग मांही। तुम शिव शकति लिहे बल बाहीं।।
अदभुत अचरज लगत अपारा। पाइ गयो केस भेद उचारा।।
सुनि मन संशय जाइ दुराहीं। जानहिं आन जे जानन्ह चाही।।
राखि अभेद साफ बतियावा। जानन्ह सुनन्ह उभरु मन भावा।।
सनत्कुमार देव ऋषि रूपा। वचन सुनिय नन्दी अनुरूपा।।
ऋषि मुनि वचन हृदय मन छेदा। उद्यत नदी भे बरनन भेदा।।
सोचु न भल बिनु सांच बताये। सुनहु मुनीश वचन मुख लाये।।
सावधान मन भरि अनुरागे। सनत्कुमार सुनन्ह सो लागे।।

संशय सनत्कुमार कै, नाशेउ नन्दी राय।
सभा सुनावत बैन कह, शिव बल जैसे पाउ।।56।।

सनत्कुमार सुनहु मन लाई। शिव प्रभुता हम जेहि विधि पाई।।
नाम शिलाद रहेउ ऋषि एके। परम तपस्वी धरम विवेके।।
शालंकायन पूत शिलादा। पित हित विप्र भावना ज्यादा।।
जेहि विधि होइ उद्धारन पुरखन। कर्म सो काज सुहावत ता मन।।
करिय इन्द्र तप पितर उद्धारन। नाहि थोर दिन बरस हजारन।।
देखि महातप इन्द्र मगन भै। देन आप वर निकट प्रगट भै।।
भाखु शिलाद तू आपन काजा। कह अस बैन इन्द्र महराजा।।
करु तुम्हार तप हमें बुलावन। देन बलांश कीन हम आवन।।
नमनत इन्द्र चरन मुनि देवा। स्तुति कीन जोरि कर सेवा।।
कह मुनीश अस चाह हमारे। पूत अयोनिज अमर प्रकारे।।
स्वारथ हेतु इहइ तप कारन। हम करि सुरपति द्वार पुकारन।।
मांग शिलाद सुनत देवेशा। भै विस्मित बनु सोच विशेषा।।
पूत अयोनिज मृत्यु विहीना। भव लोके अस मिलत कहीं ना।।

इन्द्र आप असमर्थ बतावा। मिलइ केसस सो जुगुति सुझावा।।
शिव बजाय दइ सकइ न दूजा। मानहु बात करहु तिन पूजा।।
अस कहि भवन फिरे सुर जीता। मांनु शिलादू वचन पुनीता।।

इन्द्र वचन उपदेश लै, शिव तप लगे शिलाद।
साल सहस अवसर विगतु, पूजत शंकर पाद।।57।।

तप शिलाद कर अदभुत ढंगा। जेहि विधि हरखहिं धारी गंगा।।
देखि विकट तप हरखहिं देवा। सो प्रभाव व्यापु महदेवा।।
भयउ प्रगट तपसी दुख हारी। दीन दयाल प्रभु त्रिपुरारी।।
देखि शिलाद दया लगि ढेरा। ध्यान नयन मुनि नाहि उबेरा।।
दशा देखि स्थिति सब जानी। कह महेश जागउ मुनि ध्यानी।।
अवा देन वर मांगउ चाहा। अस मधु वचन शंभु अवगाहा।।
ध्यान मगन मन लीन समाधे। तबहुं न खोलेउ नैन शिलादे।।
जेस हित सन्तति उपजहिं चिन्ता। तानुसार भै शिव भगवन्ता।।
प्रेम विवश चह तिन्हइ जगावा। सेवक जानि मनहुं सुख आवा।।
शंकर कर परसत मुनि गाते। कह अब जागु राखु जौ नाते।।
हम शिव रूप देन वर आये। जौन चाह सो देहु बताये।।
सुनहु मुनीश्वर बात हमारी। पुरउब आशा सकल तुम्हारी।।
जौ अस कथिय महेश्वर बयना। खोलु शिलाद समाधी नयना।।
सन्मुख पाउ शिवम परिवारा। मन विस्मित भा मोद अपारा।।
सहित उमा स्कंध गजानन। तेजोमय शंकर पंचानन।।
कह नन्दी सुनु सनत्कुमारा। इतेउ सो सुख रह साथ हमारा।।
शोभा महिमा जाइ न बरना। लगेउ मुनीश्वर शंकर चरना।।
कुल स्वरूप सब नयन निहारी। अवरुद्ध बानि विनय अरुवारी।।
बन अनबन कह एक न जानी। इहि स्वरूप छबि रहु मन ध्यानी।।
बार बार चरनन मुनि लागेउ। करिय प्रगट भगती अनुरागेउ।।
भाव भगत अन्तर मुदिताई। बूझि कृपानिधि वचन सुनाई।।
चाहत काव भाखु मुनिराया। तुम सम तपसी दूज न काया।।

कृपासिन्धु वाणी सुनत, भा शिलाद प्रसन्न।
इहि स्वरूप ते नाथ मोहि, राखु सदा सम्पन्न।।58।।
पूत अयोनिज भांति तुम, मृत्यु हीन हम चाह।
नाथ कृपा इतनी करउ, लखु चिर दिन ते राह।।59।।

मांग मधुर अस करिय शिलादा। सुनि स्वीकारे सृष्टी दादा।।
पूत अयोनिज नन्दी नामे। बनि अवतरबै तुम्हरे धामे।।
देत वचन परिवार समेता। होहिं पूर कह कृपानिकेता।।

भाग्यवान को तुमहि समाना। जग पितु पिता पाउ वरदाना।।
लागि चरन पुनि पुनि मुनिराई। सकुले शिव सन शीश नवाई।।
दै वर विदा भये अखिलेश्वर। आपु धाम कैलास पतीश्वर।।
इत शिलाद आश्रम चलि आये। शिव अवतरण बात पसराये।।
सुनि हरखे सब आशा आवन। भाव राखि लगु समय बितावन।।
रह शिलाद मन परम सुखारी। जोहत आवहिं केस त्रिपुरारी।।

बीति गये कछु काल जौ, यज्ञ विरांचु शिलाद।
करत यज्ञ सम्पन्न सो, भै शिव वाणी याद।।60।।
पाइ समय शिव चेतना, मने शिलादे जाग।
देखि समय अनुकूल सो, आई करन सुभाग।।61।।
यज्ञ देव प्रसन्न बनि, कीन्ह मोर निर्माण।
रूप अगिनमय अग्नि ते, उपजा लेकर प्राण।।62।।

सनत्कुमार सुनहु वच मोरा। रह शिव शकति जनम क्रतु कोरा।।
जनम अयोनिज कुण्ड मझारे। रूप रंग रह शिव अनुसारे।।
जटा मुकुट भुज सोहत चारी। तेज अगिन मय छबि लय कारी।।
सोह त्रिशूल रुद्र अनुहारन। लेत जनम रह रूप हमारन।।
पावक व्यापि रहइ सब मांही। पावक रूप भले जग नाही।।
तानुसार शकती शिव अंशा। व्यापु संग पुरवहि जन मंशा।।
तहां शिलाद पिता अनुहारे। पर शिव मानिय नमन उचारे।।
परमानन्द शिलाद प्रभावा। नन्दी नाम निकसु मुख आवा।।
मोहि शिलाद पूत सम जाना। गोद उठायउ बाल समाना।।
लाइअ पर्ण कुटी पहुंड़ाये। कुण्ड रूप गा शिशु तन पाये।।
मोहि मिली पुनि मानव काया। लीन्ह ग्रसि तब जगती माया।।
कीन पिता लोके अनुसारा। जातकर्म सर्वस संस्कारा।।
पूत भांति माता पितु पाले। जानि मोर तन दीन दयाले।।
पावत आयुष वर्ष पांच की। पिता बनायउ वेद वाच की।।
जब दिन सात बरस हम पावा। दुइ ऋषि देखन्ह मोहि सिधावा।।
दृष्टी दिव्य परम तप धारी। कथहिं हाल पर आग पछारी।।
पाइ पिता अस मुनिवर द्वारे। आसन दीन्ह परम सतकारे।।
कैसेन भूत भविष्य हमारा। चह पितु जानन उन मुनि द्वारा।।
मोहि विलोकत लगेउ बतावन। ज्ञाता वेद तनय तन पावन।।
दूज बाल अस कतहुं न देखा। पर इक दोष दिखात विशेखा।।
आयू शेष बरस बा एके। बाढ़हिं सब गुण दिवस प्रत्येके।।
सुनि मुनि वचन पिता दुखियाने। करुणा करिय तजिय गृह खाने।।

मरन हमार जानि पितु नेरा। गये बनि आपु मरन दिन बेरा।।

दुखी विलोकिय आप पितु, रहत दुखी मन मोर।
दुःख कारन पितु ते पूंछेउ, एक दिवस कर जोर।।63।।

सुनहु पिता तुम रहत दुखारी। हम निशि दिन जब तुमहिं निहारी।।
कारन कौन बतावहु मोहूं। सुनि दुख दूरि करउं सब वोहूं।।
साहसमयी बलद वच सुत के। सुनिय पिता रोयउ अस कहि के।।
विगत अलप दिन मरन तुम्हारो। आइ देव ऋषि वचन उचारो।।
जब तब इहि दुख होश जोराहीं। आंसू आउ नाइ सहि जाही।।
तनय तुम्हारउ तन अवलोकत। करुणाई बनु गा थकि रोकत।।
जानि पिता दुख कारन मरना। सुनहु सनत तब हम अस वरना।।
सुनु पितु होइ न मरन हमारे। काह मरत तुम इहि दुख मारे।।
संशय त्यागि मनोमय खोवा। जांनु अमर मोहि अब न रोवा।।
नाहिय मोर मरन दिन अल्पे। मांनु सांच हम करि संकल्पे।।
जीव जन्तु जग कोउ समाजा। सुर मुनि दनुज सहित यमराजा।।
सकइ न मारि करहुं विश्वासा। पितु मन राखु अमरता आशा।।
भय विहाइ वच मानहु सयथा। कहत सांच दै शंकर शपथा।।
कह पितु बात केसस हम मानी। झूंठ न होइ देव ऋषि बानी।।
पुनि शिलाद नन्दन समुझावत। पिता मनोमय दूःख छुड़ावत।।
जीतब मरन न जग केउ माने। एक नाहि जग लोग बखाने।।
सुनहु पिता जीतब हम जैसे। करि शिव भगती लै वर तैसे।।
पाउ न बुधि विद्या सफलाई। शिव बजाय जग आन उपाई।।
तजु सन्देह मौत न पाइब। भले करत तप समय गंवाउब।।

पितु से अस वाणी कहत, चरनन करत प्रनाम।
बेरि सात फेरी करिय, पुनि पहुंचेउ वन धाम।।64।।

सनत्कुमार सुनहु चितलाई। आगु जइस हम कीन कमाई।।
रहहीं तहां रैन दिन शानित। वन एकान्ते जग जन जानित।।
मानेउ ताहि तपो स्थाना। भल विधि करिय उमा शिव ध्याना।।
चित से न उतारु पंचानन। रुद्र मंत्र तजि वाक न आनन।।
ध्यावत शिव कुल मन एकागे। लाइ भाव पावन अनुरागे।।
तप अस करत विगत दिन सगरे। सन्मुख आउ मरन दिन हमरे।।
काल न आव आउ महकाला। अस कृपाल सो दीन दयाला।।
प्रगट भयो शिव लै परिवारा। मातु उमा दोउ बाल कुमारा।।
गयउ पहुंचि हम जेस शिवनगरी। मरन दिवस अस तप करि रगरी।।
काल प्रभाव मिलेउ शिव लोका। सकु जग पाइ मिला जेस मोका।।

हुवत प्रगट कह वसुधा वंदन। चाहत काव शिलादे नन्दन।।
मोहि लगत तुम परम पियारा। मिलु तुम्हरे तप सुख अनपारा।।
तब लौं नन्दि जोरि कर दोऊ। लागे शिव पद विनवत वोऊ।।
वचन विनीते आरत भाऊ। नन्दी आपन हाल सुनाऊ।।
कहा छिपा नहि दीन दयाला। आज हमार रहा दिन काला।।
अवसर काल विलोकउं तोहूं। अस को भाग्यवान जग होहूं।।
बूझि हवाला दीन दयाला। अन्तर छोह लाइ ततकाला।।

कर सहराइअ गात मम, बोलेउ कृपानिधान।
आउ न नेरे काल भय, तुम हो मोहि समान।।65।।
जिन मुनि भाखे काल दिन, तिनहुन हमीं पठाव।
भय दिखाइ करवाइ तप, आपन तटी बनाव।।66।।

सुनु नन्दी तुम मोहि समाना। सपनेव नाहि काल भय प्राना।।
करु जीवन भर मोरहु काजा। पीवत सरस सुधारस ताजा।।
कुल समेत लह तुम अमराई। अविनाशी अक्षय प्रभुताई।।
सनत्कुमार सुनहु तब आगे। शंभु शकति जेस मम उर जागे।।
माल कमल शिव मोहि पिन्हाये। परत गले गुण तासु दिखाये।।
गवा बदलि मम मानव काया। जनम दूज बनु शंकर माया।।
नयन तीन मिलु शंभु समाना। सोह भुजा दस करि बलवाना।।
प्रथम चीन्ह न रहिगा साथेउ। जब सहराइअ शंकर हाथेउ।।
मैं जानत निज पाछ हवाला। रहा न मोर दूज मन ख्याला।।
लगु लागन्ह मैं शंकर दूजा। प्रभुता देखि गवा जग पूजा।।
तन परिवर्तन करि त्रिपुरारी। मोपर दीन्ह जटा जल झारी।।
नन्दी नदी रूप परमाना। बना पंच नद सो स्थाना।।
कहि नागेश्वर शंभु पुकारेउ। पार्वती कह तनय कुमारेउ।।
गणन्ह बुलाइ महेश्वर आपन। गणपति पद कीन्हे स्थापन।।
कह महेश आदेश हमारू। मोसम जल नन्दी जे डारू।।
होहिं मनोरथ पूरण ताके। पूजन मोर फरइ घर वाके।।
तहां लोक भव भीड़ जोरानी। जन्महिं थिरहिं जहां शिव दानी।।
सुर ब्रह्मादिक तक चलि आये। परम मुदित जय मोरि मनाये।।
जंगल मंगल अवसर व्यापा। सर्वानन्द शंभु परतापा।।
गणपति पदे मोर अभिषेका। एक नाहि करि देव प्रत्येका।।
कह नन्दी सुनु सनत्कुमारा। गणाध्यक्ष पद विश्व उचारा।।

वर बल पद सम्पन्न लखि, शिव इच्छा अनुसार।
वने ब्याह सुर दीन्ह रचि, भवा मंगलाचार।।67।।

मारुत तनया सुयशा नामा। भा ताते परिणय वन धामा।।
व्याह व्यवस्था सर्वस काजा। महालक्ष्मी तेहि थल साजा।।
अवलोकिय पतनी सुख साथे। सन्मुख सुरन्ह बोलु जगनाथे।।
कीन्ह महातप तुम जेहि तांई। देन ताहि बारी अब आई।।
अजर अमर तुम होउ सुखारे। भुजबल मोसम रहि परिवारे।।
बार बार अस कहत सुझावा। भवन त्यागि मोरे गृह आवा।।
पितु सुख बादि ताहि स्वीकारा। इहि विधि शिव बल रूप हमारा।।
आपु मानि कैलास पतीश्वर। कीन गमन सुर बोलु जयेश्वर।।
फिरेउ भवन पितु कीन सुखारे। जाहि दुखे पितु दुखित हमारे।।
सहित नारि तन अदभुत देखे। चीन्हि पाउ नहि बुद्धि विशेखे।।
बीती बातन हाल बतायउ। दै परिचय विश्वास दिलायउ।।
सुनि मन बूझि पिता हरखाने। लागे उत्सव गृहे मनाने।।
पितु परिवार समेत मुनीशा। भयउं अमर गहि घर जगदीशा।।
नित उठि नमनउ कृपानिकेता। मिलु जेस भगति राखु मन चेता।।

कथा व्यथा जीवन यथा, मुनिवर रहा हमार।
महिमा उमा महेश कै, होत मोर जयकार।।68।।
नन्दि वतारण हाल सुनि, देव सभा हरखानि।
सुनन्ह पूर्ण अवतार शिव, सुर मुख निकसी बानि।।69।।

वन्दे महानन्दमनन्तलीलं
महेश्वरं सर्वविभुं महान्तम्।
गौरीप्रियं कार्तिकविघ्नराज
समुद्भवशंकरमादिदेवम्।।
जटाभुजंगपिंगलस्फुररत्फणामणिप्रभा,
कदम्बकंकुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदान्ध सिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे,
मनोविनोदमद्भुतं विभर्तु भूतभर्तरि।।
ललाटचत्वरज्वलद्धनंजयस्फुलिंगभा,
निपीतपंचसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमान शेखरम्,
महाकपालि सम्पदे शिरो जटालुमस्तु नः।।
भैरवं दंष्ट्राकरालं भक्ताभयं करं भजे।
दुष्टदण्डशूल शीर्षधरं वामाध्वचारिणम्।
श्रीकाशीं पापशमनीं दमनीं दुष्टचेतसः।
स्वर्निःश्रेणिं चाविमुक्तपुरीं मर्त्यहितां भजे।।

नमामि चतुराराध्यां सदाऽणिम्नि स्थितां गुह्याम्।
श्रीगंगे भैरवी दूरीकुरु कल्याणि यातनाम्।।
विविध अवतरण शंभु कै, विविध हेतु बहु रूप।
पर उद्देश्य सबु एकु रह, नाशन दुःख भवकूप।।70।।
सुरन्ह काल भैरव विनय, कीनेव शीश नवाइ।
चह जानन अवतार विधि, सुनन्ह लोभ अधिकाइ।।71।।
नाम काल भैरव सुनत, भय खावत संसार।
जथा नाम गुण काज तेस, मिलु देखन्ह चहुंवार।।72।।
पूर्ण रूप अवतार सो, जग पूजे अस मानि।
काशी भैरव देव पद, बारम्बार नमामि।।73।।

अधम विनाशी धरम विकासी। हेतू भगत परम सुखरासी।।
अघटित घटत सुघट बिघटावत। कठिन सरल करि सिद्धि थमावत।।
सेवी शेखी शकति बढ़ावत। महिमा भैरव आप दिखावत।।
काशि काल भैरव सुनि नामा। देव दनुज झुकि करहिं प्रनामा।।
तेज भयावह परम प्रचण्डा। करहिं लोक अभिमान बिखण्डा।।
महिमा अदभुत विस्मय कारी। क्षमता दुख हर प्रद भय भारी।।
अभिमानी अभिमान विदारण। भैरव रूप शंभु अवतारण।।
जेहि जानहिं जग शंभु विरोधी। बनहिं काल भैरव प्रति शोधी।।
जे देहीं दुःख राष्ट्र समाजे। कोपहिं तापर सम यमराजे।।
रुद्र भले जग विनती सुनहीं। कुपित काल भैरव न हरखहीं।।
परहिं जे पाला भैरव काला। पीसि उठत जेस पिसइ मशाला।।
जापर हरखहिं भैरव काला। सो बनि देव वधइ कलि काला।।
लोक काल भैरव बल कोपन। दूज देव सक्षम न रोकन।।
जेस जग औषधि देव स्वरूपा। रोग नाशि बनहीं सुख रूपा।।
तेस भैरव भय हरत धरा कै। मन चाहा फल भरत घरा कै।।
भैरव हरखे शिव हरखाहीं। काशी धाम प्रमुख जग मांही।।

भैरव महिमा सुर सुनिय, चाहा जन्मव जांनु।
केहि काजे केहि कारने, जग इतना सनमानु।।74।।

अति प्राचीन काल इक बारा। रह सुमेर गिरि शिव दरबारा।।
करन दरस पावन सदज्ञाना। अवसर बूझि सुभल स्थाना।।
नारदादि विष्णु विधि देवा। आये मिलन धाम महादेवा।।
संयोगन सुर सबहि पधारे। चलु अगुवा संग सेन पछारे।।
सुर समाज बनु सभा समाने। शैल आश्रम शिव स्थाने।।
सुर पुर भांति सुहानी माया। पसरी छबि ऋषि गण तहं धाया।।

जहां देव त्रय सुरन्ह बसेरा। लागे करन ऋषी गण फेरा।।
परम मनोहर जग मन भावन। बढ़न लाग तहं ऋषि मुनि आवन।।
गा बनि महा सभा आकारा। जौ सब गयउ बैठि इक ठारा।।
देखि सभा नारद ललचाने। बंटु सद सीख मनहिं अनुमाने।।
निज विचार दै सुरन्ह समर्थन। सभा बीच प्रस्ताव भा अर्पन।।
सभाध्यक्ष शंकर स्वीकारा। करिय विधाता ओर इशारा।।
सुरन्ह सहित देवर्षि मुनीशा। लह अनुकूलित आयसु ईशा।।
कह देवाधि देव प्रजापति। लोक पिता जानउं सृष्टीपति।।
सोह सभा सुर करि अभिलासा। सूनन्ह तत्व बोध जिज्ञासा।।

चाह सभा विधना सुनहु, तत्व बोध मुख गाइ।
सुर मुनि मानव सन्त ऋषि, देहू बोध कराइ।।75।।

अस नारद विधना सम्बोधे। मुख तुम्हरे मिलु प्रबल प्रबोधे।।
सुर समूह ऋषि हरि हर आगे। भाखि बनावहु सभा सुभागे।।
सुरन्ह चाह नारद अनुरोधे। चाहा विधना बांटन बोधे।।
कारन करनी होनी भावी। विधना अन्तर गै बनि हावी।।
आपु बोध मद तन मन भयऊ। भटके पथिक भांति चलि गयऊ।।
लागेउ विधना सभा सुनावन। सगरव आत्म प्रशंसा गावन।।
तत्व बोध नहि सभा नुकूले। अहंकार वश निज पथ भूले।।
रह जो चाह ताहि न भाखेउ। अन्तर दोष मोह मद राखेउ।।
जेस करनी फल लागहि वैसे। सुर समूह शंकर मति ऐसे।।
सुनहु देवगण कथिय विधाता। हम सृष्टी रक्षक पितु माता।।
जगत चक्र धाता प्रवर्तक। अज अनादि सर्वस संवर्तक।।
रूप निवर्तक ब्रह्म निरन्जन। मोसम आन कौन जग वन्दन।।
आदि अन्त सब मोर विरांचा। जौन दिखात बना जग ढांचा।।
विधना तत्व बोध नहि भावा। सभा न प्रिय लगु हरि रिसियावा।।
जौन वचन सुर नाहि पियारू। गनु सो वाणी जीव गंवारू।।
अनप्रिय बैन मने अभिमाने। परसहिं सब विधि सुर अपमाने।।
जहं गाली गलौज प्रसंगा। खल अपमान सहइ इहि ढंगा।।
करि संघर्ष समर जे हारहिं। तेहि अपमान शूर अरि धारहिं।।
देव विरोधी ब्रह्मा बयना। सुनन्ह चाह हर सुर मन चयना।।
कछुक मुखे निकसा तेहि ठौरे। विधना भाव कथन कुछ औरे।।
बनिय खलबली सभा मझारे। रहु शानित शिव वचन उचारे।।

विष्णू प्रतिवादी बनेउ, कह सुनु विधना बात।
केहि माया मति मोह भ्रम, करत अभय आघात।।76।

भयउ सृष्टि प्रवृत तुम, सो आदेश हमार।
जौ रक्षण विधि देउं तजि, होइ व्यर्थ निरमार।।77।।
करहिं संहारन नाहि शिव, जौन व्यर्थ जग मांहि।
सृष्टि व्यवस्था बनु अभल, दूज बनै भव नाहि।।78।।

विष्णु वाणी मने विधाता। लाग न प्रिय उलझा बरु गाता।।
बाढ़ि परस्पर गयउ विवादा। पहुंचिय बात लगे शिव दादा।।
देव पंजिका वेद पुराना। कह शिव बात जाइ तिन माना।।
वेदाधारे शास्त्र प्रमाने। जग बड़ देव गयो शिव माने।।
मद अभिमान मने जेहि छावा। नीति नयन तेहि नाहि सुहावा।।
काहु वचन नहि मांनु विधाता। बाढ़ा देव सभा उतपाता।।
सभाध्यक्ष शंकर समुझाये। शानित होवहु वचन सुनाये।।
शिव उपदेश नाहि बनु हावी। कारन व्यापि रही कछु भावी।।
जब जब देव दनुज बौराहीं। करहिं अनीति बले भुज बाहीं।।
मानहि नाहि शास्त्र प्रमाना। मद मन लाइ चलइ मन माना।।
तब तब विरचि महेश्वर माया। महिमामयी मनोहर काया।।
नाशहि दोष मनो अभिमाना। भय दिखराइ परसि सदज्ञाना।।
एक बार नहि बेर अनेका। बांटत आयउ शंभु विवेका।।
बैर विरोध परस्पर फूटन। कीन्ह दूरि धरि धरि तन नूतन।।
सुरन्ह सभा विधना मद देखे। शिव मन उपजा कोप विशेखे।।
देव विवाद निवारन कारन। चह भावी अवसर अस टारन।।
शिव बजाय सक्षम नहि आना। दूजे परसन बल प्रमाना।।
केहि मद जात बिना बल देखे। आज विधाता मिलु तेहि लेखे।।
शंकर कोप बनेउ विकराला। तानुसार पर भा ततकाला।।
पुरुष रूप प्रगटाशिव आगे। करन काज मुख आयसु मांगे।।
लीन्ह महेश भाव पहिचानी। लीन्ह साथ निज सम सेनानी।।
महाशक्ति मय जानि कृपाला। निज इच्छा भाखिय ततकाला।।
दीखहु देव सभा मद जाहू। करउ चूर समझउ जेस वाहू।।
सभा सनाटा भा तेहि काले। जे जहं रहा बैठ चौताले।।
विधि विष्णु सब आप डेराने। मद महिमा जेस सबै हेराने।।
सुरन्ह विलोकि पुरुष प्रभुताई। परखि लीन्ह बड़ता लघुताई।।

काल रूप विकराल तन, नर फिरु सभा मझार।
कोप दृष्टि सब पर करत, शिव आयसु अनुसार।।79।।
भैरव सेना भाव लखि, सुर समूह भा दंग।
शिव जय गूंजी तेहि सभा, चलु आगिल प्रसंग।।80।।

सेन सहित भैरव भगवाना। शिव तट ठहरि सभा करि ध्याना।।
कह जेहि भुजबल शक्ति अपारा। मानहिं आपु जगत सरदारा।।
कहि भैरव गरजे घन नांई। आइ लेहि सो बल अजमाई।।
जिन भैरवी गर्जना चीन्हा। मानि रूप शिव स्तुति कीन्हा।।
शंकर कोप विलोकत नयने। ब्रह्मा मुखे आउ नहि बयने।।
मद हंकार अकरु अभिमाना। इहि सम तत्व बोध नहि आना।।
दायक परम तत्व प्रभुताई। मदता प्रभुता आप भुलाई।।
श्रद्धा समर्पण शिव पद जोई। दानव देव मनुज केउ होई।।
पावइ सहजे आपन माना। मन विहीन जौ रहु अभिमाना।।
धात विधात शरण सुखदाता। शिव सर्वज्ञ सृष्टि पितु माता।।
शान्त परम तीनेउ पुर स्वामी। आदि अनादिक अन्तरयामी।।
इहि विधि विनवत सृष्टि विधाता। शिव चरने लगि करि प्रिय बाता।।

सहज सरल सुर देव शिव, भयउ मुदित नित खानि।
सभा समापन सुर बिदा, करि नर ते कह बानि।।81।।

क्रोध शकति जेस अन्तर मोरा। सो बल सोह तुम्हारेउ कोरा।।
काल रूप तुम काल विनाशी। अघ आमर्दक अरिभय नाशी।।
मनो मनोरथ पूरण कारी। नाम काल भैरव जग जारी।।
काल काल तुम कालहु राजा। रक्षहु काले काल समाजा।।
धायेउ काल रूप मुंह बाये। जे चलु शिव तत्व पांव दबाये।।
पाप विनाशी काशी बासी। बनहू जानि मोर धर राशी।।
कृष्ण अष्टमी अगहन मासे। दिन मंगल जे तुमहि उपासे।।
जनम वार रोली सिन्दूरे। पूजे होहिं कामना पूरे।।
भैरव शैव सेन रखवारू। आठ रूप जग आप पसारू।।
पूजे भैरव शिव हरखाहीं। शिव पूजे भैरव बल बाहीं।।
भले न शिव काशी गृहवासी। पर भैरव काशी सुखराशी।।
शंकर शकति लिहे पुर फिरहीं। धरि बहु रूप सुरक्षा करहीं।।
जनम जनम अघ भैरव नाशत। अवगुन देखि करहि तन सांसत।।
भैरव विश्वनाथ प्रभुताई। ऋषि मुनि देव विविध विधि गाई।।
गयउ सकल सुर निज निज धामा। करि भैरव काशी प्रनामा।।
पाउ न देव सभा विफलाई। जब जेहि थल शिव शकति सुहाई।।

तत्व बोध के कारनेउ, देव सभा मद भाग।
शिव भैरव बनि लोक जन, अब लौं करत सुभाग।।82।।
विविध रूप अवतार धरि, करहिं लोक कल्यान।
केउ काहू केउ रूप कोउ, राखहिं शंकर ध्यान।।83।।

रुद्र रूप हनुमान शिव, सम न दूज अवतार।
आदि जनम लै आज तक, हरत धरा अघ भार।।84।।

शंकर अंश रुद्र अवतारा। पवनपूत औरस प्रकारा।।
कीश केशरी क्षेत्रज पूता। इहि विधि हनुमत रूप सबूता।।
कलिमल हारी राम निहारी। मानव हिते सकल बल धारी।।
बल बुधि विद्या शौर्य निधाना। देव भास्कर सम फल जाना।।
सकल अमंगल मूल निकन्दन। मंगल मूरति मारुत नन्दन।।
सुख राशन दुख नाशन रूपा। निर्मल देह देव धन धूपा।।
शिव समान जेस देव न आना। भांती ताहि मांनु हनुमाना।।
राम समान पुरुष जग जोई। हनूमान साथे रह सोई।।
शिव प्रभुताई संग हनुमन्ता। भये पूजित सो सम भगवन्ता।।
विनवउं महावीर हनुमाना। राम जासु जस आप बखाना।।
कनक भूधराकार शरीरा। समर भंयकर अतिबल बीरा।।
भूत पिशाच निकट नहि आवै। महावीर जे नाम सुनावै।।
अष्ट सिद्धि नवनिधि के दाता। बनु अस बल बुद्धि पवनसुत गाता।।
लिंग रूप पूजित शिव जगती। तौं हनुमान रूप बल शकती।।
तन गुण भिन्न काज इकताई। करु दोऊ ब्रह्मत्व प्रीताई।।
प्रज्ञा रूप बसत शिव माथे। हनुमत बल वक्षस्थल हाथे।।
रक्षक ब्रह्मचर्य जग दोऊ। जन जन पूजु सरल नहि कोऊ।।
जहां न इहि दोउ ब्रह्माचारा। जाति व्यापि तहं असुराचारा।।
असुरासुर आतमा घाती। जहां तहां कलि भुंइ गरुवाती।।
अस भय दोष निवारन वारे। नहि समान कोउ पवन कुमारे।।

रुद्र एकादश अंश शिव, पवन तनय हनुमान।
जन्मे चैते पूर्ण तिथि, योग शुभद बलवान।।85।।
परिचय दीन्हेउ जन्म लै, आपु अंश प्रभुताइ।
भरि छलांग पहुंचे गगन, उदित दिवाकर खाइ।।86।।
सकल देव ब्रह्मादि मिलि, तौ वर दीन्ह अनेक।
जेहि ते नाशत पवन सुत, संकट ग्रह प्रत्येक।।87।।

नाम अंजनी हनुमत माता। परम तपसिनी बल उद्गाता।।
खेलत खात करत पय पाना। जब जब सोह गोद हनुमाना।।
अंजनि कथा सुनावहि सोई। सुनि जेहि बाल महाबल होई।।
संस्कार सदगुण सदचारे। दै दीन्ही अंजनी अपारे।।
लै बल मातु वीर हनुमाना। पुनि उछले गै भानु मकाना।।
बल पराक्रम धैर्य प्रतापा। अदभुत अतुलित देखि अमापा।।

देव दिवाकर हरखेउ ढेरे। दीन्ही वेद ज्ञान सम चेरे।।
बल बुद्धि विद्या नीति निधाना। बनि घर घुमरेउ सुर हनुमाना।।
मातु बूझि बालक प्रभुताई। संगति चाह आपु बड़ताई।।
तेहि दिन नेर नृपति रह बाली। पठवा तेहि पुर सुत बलशाली।।
करि अंजनि पद नमन प्रनामा। गये बाली पुर तन बलधामा।।
पक्ष अनीति न गह बलवाना। काहु न कुमति देइं विद्वाना।।
नगर नरेशन बूझि हवाला। भै सुग्रीव संग अंजनि लाला।।
ऋष्यमूक गिरि ताहि बसेरा। लगेउ रहन्ह तहं भानू चेरा।।
विधि विधान अस बनु संयोगा। करु जो हनुमत बल प्रयोगा।।
युगल कुमार रूप धनु धारी। फिरत विपिन शैले नियरारी।।
विप्र रूप धरि हनुमत गयऊ। माथ नाइ पूंछत अस भयऊ।।
को तुम श्यामल गौर शरीरा। क्षत्री रूप फिरइ बन बीरा।।
कठिन भूमि कोमल पद गामी। कवन हेतु विचरेहु बन स्वामी।।
मृदुल मनोहर सुन्दर गाता। सहत दुसह बन आतप बाता।।
की तुम तीन देव महं कोऊ। नर नारायण की तुम्ह दोऊ।।

जग कारन तारन भव, भंजन धरनी भार।
की तुम्ह अखिल भुवनपति, लीन्ह मनुज अवतार।।88।।

लघु कुमार करि बड़ेउ इशारा। लागत विप्र वेद गुन गारा।।
बड़ कुमार कह वचन नुसारे। आपन परिचय ठीक प्रकारे।।
हम पितु वचन मानि बन आये। कोसलेश दसरथ के जाये।।
नाम राम लछिमन दोउ भाई। संग नारि सुकुमारि सुहाई।।
इहां हरी निश्चर वैदेही। विप्र फिरहिं हम खोजत तेहीं।।
आपन चरित कहां लौं गाई। कहउ विप्र तुम आपु बुझाई।।
ज्ञानवान बल बुद्धि निधाना। शंकर अंश रूप हनुमाना।।
हेतु जाहि लीन्ही अवतारा। पाइ चीन्हि मुद आउ अपारा।।
प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना। सो सुख आउ जाइ नहि बरना।।
पुलकित तन मुख आउ न वचना। निरनिमेष देखत प्रभु वदना।।
पुनि धीरज धरि स्तुति कीन्ही। वेश भूल जेस परिचय दीन्ही।।
कह प्रभु पूंछत केस नर नांई। हम सेवक जानउं तुम सांई।।
एक दूज दोऊ दुख हारी। बनि बनि परिचित भयउ सुखारी।।
कांध बिठाइअ राजकुमारा। गये हनुमन्त शैल गिरि द्वारा।।
करि करि राम काज हनुमाना। सेवक ते बनु सम भगवाना।।
जहं हनुमान राम तहं आवत। राम जहां हनुमान सुहावत।।
हनुमत भाव ज्ञान बल बूता। नाहि जहां तहं असुर अकूता।।

चीन्हि भगति हनुमान कै, रघुनन्दन सब खानि।
आपन जानिय भांति सब, बोलि परेउ मृदु बानि।।89।।

सुनु अंजनी तनय बल बंका। तुम सम लछिमन नहि मन शंका।।
समदरसी मोहि कह सब कोऊ। सेवक प्रिय अनन्य गति सोऊ।।
नावत शीश भाखु हनुमन्ता। तन मन अर्पित जीवन अन्ता।।
करब काज प्रभु आन न ध्याना। करि अस भगति प्रगट हनुमाना।।
राम भगत अतुलित बल धामा। अंजनि तनय पवन सुत नामा।।
राम लाइ सुग्रीव मिलाइअ। वानर सेन तयार कराइअ।।
जेहि विधि होइ राम हित काजा। आपु समेत तइस दल साजा।।
चलेउ सबै खोजन सिय माता। अगुवा हनुमत बल बुधि गाता।।
देव भूमि धरनी चहुं ओरे। खोजि थके पहुंचे सब छोरे।।
सिय न पाउ कपि दल घबड़ाने। तब सब ते अस कह हनुमाने।।
रहा शेष लंका पुर खोजन। सागर पार बसै शत योजन।।
लांघन सागर सब मन पछरे। कहत बैन हनुमत अस हुंकारे।।
उदया अस्ताचल तक जाई। बिनु पगु धरे धरनि फिरि आई।।
बल मोरे संग विष्णु वामन। का औकाति सिन्धु पथ लांघन।।
ब्रह्म अमृत लै भुंइ छितराई। लंक उखारहुं मूली नांई।।
रावण कुम्भकर्ण घननादा। देहुं मशलि जैसे फल गादा।।
कांपि धरा सागर मंह हलचल। जब अस गरजि बैन कह अतिबल।।
बनि तन भीम उठावत हाथा। करि संकल्प शपथ रघुनाथा।।
बिनु प्रभु काज न करि विश्रामा। सबै सुनाइ कहेउ बल धामा।।
तुम सब ठहरु सिन्धु तट तीरे। बनि निराश नहि होउ अधीरे।।
रखु विश्वास खोजि सिय लाउब। आपु कुशल प्रभु कुशल सुनाइब।।
कपिन्ह मुदित मन दीन्ह अशीशा। होउ पवन सुत विशिख वरीशा।।
आशिष चरन उठेउ हनुमन्ता। गरुड़ वेग पथ चलेउ तुरन्ता।।

बाधा नाशत सिन्धु कै, राखि राम मन ध्यान।
कीन्ह कतहुं विश्राम नहि, गयो लांघि हनुमान।।90।।

प्रभु प्रताप जो कालहि खाई। सो महिमा हनुमत तन छाई।।
लागि न देर प्रविशि गये लंका। अभय मने नाही अरि शंका।।
खोजिय सीता महल अटारी। रावण नगर गली चहुं वारी।।
मिली न सीय विभीषन पावा। लै परिचय सो भेद बतावा।।
चाह विभीषण हरि शरनाई। राम स्वभाव पवन सुत गाई।।
सुनहु विभीषण प्रभु कै रीती। करहिं सदा सेवक पर प्रीती।।
कहहु कवन मैं परम कुलीना। कपि चंचल सबही विधि हीना।।

प्रात लेइ जो नाम हमारा। मिलै न तेहि दिन ताहि अहारा।।
मोसम अधम लीन्ह अपनाई। तौ शक कहां तुम्हारिन तांई।।
सीता भेद पाइ हनुमाना। कीनेव बाग अशोक पयाना।।
सिय ते परिचय वेश दिखावा। जारि लंक रघुपति लग आवा।।
सेवा दास भगति प्रभुताई। राम विलोकि ऋणी निज गाई।।
सुनु कपि तोहि समान उपकारी। नाहि कोउ सुर मुनि तनु धारी।।
प्रति उपकार करौं का तोरा। सन्मुख होइ न सकत मन मोरा।।
सुनु सुत तोहि उरनि मैं नाही। देखेउ करि विचार मन मांही।।

सुनु प्रभु वचन विलोकि, मुख गात हरखि हनुमन्त।
चरन परेउ प्रेमाकुल, त्राहि त्राहि भगवन्त।।91।।

बार बार प्रभु चहहि उठावा। प्रेम मगन तेहि उठब न भावा।।
प्रभु कर पंकज कपि के शीशा। सुमिर सो दशा मगन गौरीशा।।
सोई भाव राखि हनुमाना। कीन्ह आपु तन जीवन दाना।।
सागर सेतु कीश लै बाधा। लंका समर प्रभु बल आधा।।
रावण नाशि अवध पुर आये। राम जहां हनुमान सुहाये।।
राम राज कारज प्रभुताई। यश कीरति चहुं दिशि उभराई।।
सुमिर पवनसुत पावन नामू। अपने वश करि राखे रामू।।
अष्ट सिद्धि नवनिधि के दाता। अस वर दीन्ह जानकी माता।।
भूत पिशाच सबै भय खावे। जहं जे हनुमत नाम सुनावे।।
ऋषि मुनि यती गृही सुख भोगी। ऊंच नीच योगी आरोगी।।
राम भजहिं जे पवन कुमारा। पावहिं वैभव पथ सदचारा।।
रहहिं अभय भय नेर न आवे। साधिय भगति रुद्र बल पावे।।
जेहि मुख राम कथा परु काना। तेहि आपन मानहिं हनुमाना।।
पुरवहिं तासु मनो अभिलासा। बूझि समझि ताको प्रभु दासा।।
जब लौं राम नाम जग माहीं। तब लौं हनुमत छाया छांही।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह हनुमत चेते।।
बनि शनि मंगल हनुमत नेही। साजहि तेल सिन्दूरे देही।।
कटहिं कोटि अघ भव अपराधा। आउ न सन्मुख कोउ कलि बाधा।।
राम भगत अतुलित बल धामा। रुद्र अंश पर सरल धरा मा।।
परमादर्श चरित भव हीता। असभल पवन तनय सद नीता।।
चुकइ नाहि हनुमत प्रभुताई। एक तो शिव दुज राम सहाई।।
बार बार वन्दउं पद उनके। जे जग हित कर जग कछु बन के।।

प्रनवउं पवन कुमार बल, दुःखनाशक घन ज्ञान।
राम रूप आगार तन, पवन तनय हनुमान।।92।।

शिव लीला अवतार कथ, बहु प्रकार जग देख।
जीवनीय धन मानि सब, सर्वस देव सरेख।।93।।
हंस यक्ष पिप्लाद बनि, कहुं भिक्षुक नटराज।
नीलकण्ठ दुर्वास कहुं, पशुपति जीवन साज।।94।।
शिव पूजइ प्रणव जपइ, श्रद्धा भगति सेवकाइ।
बिनु प्रयास मुक्ती मिलइ, रहहीं शंभु सहाइ।।95।।
अत्रि और अनसूय सति, शिवोपासना कीन्ह।
शिव कृपा ते जान्हवी, जन्म आश्रम लीन्ह।।96।।

एक बार दक्षिण दिशि मांही। चित्रकूट पावन थल ठाहीं।।
रह वन कामद परम मनोहर। मानस मनप्रिय शोक सबोहर।।
अत्रि महामुनि ब्रह्मा पूता। वन कामद प्रिय लाग बहूता।।
अध अंगी अनसूया साथे। लगे करन तप भजि जगनाथे।।
यदपि श्रद्धा शिव रहा अगारा। पर तप घोर अबकि अरुवारा।।
विविध प्रकार बनेउ शिव सेवी। बसि कामद अति अनसू देवी।।
लाइ भगति करि शिव आराधन। तन मन वचन समेते साधन।।
संयोगन मुनिवर तप काले। न जल बरसा व्यापु कुकाले।।
हाहाकार मचा सब ठाहीं। भूख प्यास सब जिव चिल्लाहीं।।
शिव ध्याने मन लीन मुनीशा। दीन्ह बिताइ बरस दस बीसा।।
सूखा दुःखे सबहिं घबड़ाने। तेहि वन ते सब जीव दुराने।।
क्रमशः भागि चले सब चेरा। पर मुनिवर नहि ध्यान उबेरा।।
अत्रि अवर अनसूया जोड़ी। ताप सहत सो वन न छोड़ी।।
कोप प्रकृति दिखावइ जितरा। मुनिवर ध्यान बढ़ावहिं उतरा।।
पति सेवा संरक्षण कारन। रह अनसूय बसी बन ठारन।।
जाइ तो जाइ केसस सो जाई। जौ पति वन बिच ध्यान लगाई।।
बूझि प्रकृति कोप भय भारी। मन अनसूया तपन विचारी।।
करिय स्वामि सम शिव सेवकाई। संभव तौ घन गगन दिखाई।।
विपति भयंकर केहि विधि टारी। दुःख भोगत दिन बहुत गुजारी।।
जेहि विधि वारिष करइ अवाई। अनसूया सो चाह बनाई।।

पति समीप शिव पार्थिव, तब अनसूया थापि।
पति समान पूजन लगिय, श्रद्धा राखि अमापि।।97।।
पति परिक्रमा नित्य करि, तानुसार शिव सेव।
अनवर्षण कारन हरन, कहि सहाय बनु देव।।98।।

करि अनसूय अन्न जल त्यागन। लगि शिव सेवा बड़ अनुरागन।।
सेवहिं पति पति स्वामी साथे। भगति भावना पुष्पन हाथे।।

सेवा श्रद्धा समर्पण धारन। कीन्ह सती व्रत बल उदगारन।।
रही लीन तप गा दिन ढेरे। वारि न बरसु ना नभ घन घेरे।।
देखि विकट तप सुर चकराने। अत्रि आश्रम करहिं पयाने।।
आवहि केऊ केऊ फिरि जावइ। केऊ दिवस दुइ चारि बितावइ।।
तपसिन परम तपस्या गावत। भागि जाहिं पर ठहरि न पावत।।
देव मनावत बारिस होवन। अत्रिनुसूय मनो दुख खोवन।।
आये देव देखि सब लौटे। तपसिन दशा विलोकत चौके।।
अत्रि असूया कै सहयोगी। गईं न गंगा रह शिव योगी।।
शिव गंगा अस करहिं विचारा। बनु विधि काह तपसि उपकारा।।
मन विचारि अस करिय निवासा। पुरवन्ह अत्रिनुसूय भिलासा।।
वर्षे अर्धशतक उपरान्ता। अत्रि समाधि आपु बनु अन्ता।।
भा मुनि चेतन खोलिय नयना। सेवि बुलाइय सुनाइअ बयना।।
प्रिया आनि जल मोहि पियावा। जलत उदर बहु दिवस तपावा।।

सुनि अनसूया स्वामि वच, चिन्तित भंई अपार।
दै न सकउं पति नीर जौ, तौ जीवन धिक्कार।।99।।

चिन्ता नीर व्यथा बनि व्यापा। स्वामि वचन टारब रह पापा।।
नीर मिलब आशा नहि मन मा। तबहुं प्रयास करिय खोजन मा।।
लीन्ह कमण्डल लावन बारी। ऋषि पत्नी निज पांव निकारी।।
जाब कहां रह नाहि ठिकाना। कीन्ही स्वामि वचन सन्माना।।
,आश्रम तजिय गई कछु दूरी। पुरवन्ह स्वामि मांग मजबूरी।।
जाउं कहां सूझत कछु नाही। विकट समस्या जल नयनाहीं।।
सती सती बल सुधि बनि आवत। जल चहुं निरखति पांव बढ़ावत।।
पाछ विलोकु दिव्य तन नारी। देखि सती मृदु वचन उचारी।।
सखी कहां विचरति केहि कारन। बन बीहड़ सूखा इहि ठारन।।
स्वारथ कौन काज बतलावा। दरस तुम्हार मोरे मन भावा।।
मन अनसूय बैन सुनि हुलसा। लगु जेस विधना कुछ बल परसा।।

कह अनसूया बैन प्रिय, हे देवी तुम कौन।
तुम विचरति केहि कारने, दो परिचय हो जौन।।100।।
बिनु जाने मांगो केसस, विनय करउं केहि भांति।
अनसूया तेहि नारि ते, बोलिय ऐसन बाति।।101।।

भाव विनम्र पियारे वचने। तब गंगा बोली मुख अपने।।
स्वामि भगति शंकर सेवकाई। जानि तुम्हारु आश्रम आई।।
लाग परम प्रिय लीन्ह बसेरा। तुम सम जग करि को पिय फेरा।।
जब जब दीखु तुम्हारउ वदना। बनु अन्तर पावन मन मगना।।

सकउं तुम्हार व्यथा दुख दाहा। मैं गंगा मांगउ मन चाहा।।
गंग वचन अनसूय सुहावा। कीन्ह प्रणाम चरन चित लावा।।
कह पति मोर समाधि ते जागे। न बरसा जल सो जल मांगे।।
आयसु मानिय जानि पियासा। देन नीर हम कीन्ह प्रयासा।।
लीन्ह कमण्डल इत उत विचरी। जौ मिलु नीर कमण्डल त भरी।।
तुम गंगा हम खोजत नीरा। तुम सम आन हरइ को पीरा।।
जौ प्रसन्न तुम गंगा रूपा। तौ प्रगटउं इहि नीर स्वरूपा।।
पाइ नीर पिय प्यास बुझाई। पावइ तीय धरम कुशलाई।।
जेस रोगी तेस वैद्य विचारा। जौ मिलु तौ बनु भल उपचारा।।
कह गंगा करु गर्त बनावन। तौ बनि वारिधि करउं बहावन।।
गंगा वचन बूझिय अनुकूला। उर अनसूय दुरानेउ शूला।।
अनसूया गंगा अनुसारे। कीन्ह गर्त लघु तुरत तयारे।।
देखत दृष्टि विगत पल अवसर। गरत जान्हवी जल ते गा भर।।
वर प्रत्यक्ष तुरत फलदायी। पाइ सती बहुतइ हरखायी।।
पावन नीर कमण्डल बोरा। मनहुं बरसि गा जल घन घोरा।।
फिरन्ह ते पूरब कह सुय बानी। मांनु बात इक गंगा रानी।।
स्वामि बुलाइ करिय विश्वासा। तबलौं तुम करु गर्त निवासा।।
बास निवास प्रबासन सुनि के। गंग वचन बोली तब हंसिके।।
मास दिवस तप फल जौ देहू। तौ हम करबै गर्त सनेहू।।
लीन्ह मानि अनसूया बाता। निवसन गर्ते गंगा गाता।।
पावन परम सुधा अनुहारा। जल जाहन्वी कमण्डल सारा।।
गंगा गर्ते वास कराई। सजल कमण्डल सूया धाई।।

हाली हालिय पांव धरि, अनुसूया अफनानि।
देन चली जल स्वामि को, मन प्रभु धन्य बखानि।।102।।

पहुंचि कुटी अनसूया माता। रह मन पुलकित हरखित गाता।।
गंगा दत्त सुपावन नीरा। नाशन क्षमता भव तृष पीरा।।
लाइ सती रखु स्वामि आगे। प्यास बुझावहु कहिअ नुरागे।।
अनसूया वाणी मधुराई। श्रवन समानि मुनी सुख पाई।।
कीन्ह आचमन मुख प्रक्षालन। भयउ शान्त चित्त भागे तापन।।
अदभुत स्वाद सुपावन पानी। सहित जीभ तन मन प्रिय मानी।।
पाइ स्वाद मुनि मनहिं विचारै। स्वाद मिठासन सोचि निहारै।।
तौ देखा सूखे वन पाता। आवत पवन गर्म अधिकाता।।
लगु जेस तीनउ ताप वियापा। लागत दिशा व्यथा अनमापा।।
करत तर्क मुनि मनहिं विचारत। लाइय विस्मय वचन उचारत।।

अरे! असूया कहां मिलु नीरा। नयन विलोकत सूखा पीरा।।
न जल बरसा न घन घेरे। अस लागत जेस गै दिन ढेरे।।
जाइ कहां ते लाइअ आनी। मीठा पावन मन प्रिय पानी।।
इहि जल स्वाद आन जल नाही। मिला न कबहूं जनम गंवाहीं।।
जेस हम पियत रहेन नित नीरा। रहेन बुझावत प्यासन पीरा।।
ताते मीठ कई गुन लागा। अन्तर जात दिव्य बल जागा।।
सांच बताउ पाउ केहि ठांही। होवत मन तहं कुटी रमाहीं।।

स्वामि वचन अनसूय सुनि, विनवत सकुचत ढंग।
भाव निवेदन भेद कह, पावन्ह जल प्रसंग।।103।।

वचन असूय सुनत मुनिराये। चकराने विस्मय मन लाये।।
मन विस्वास न आवत मोरे। सुनहु प्रिया वाणी मुख तोरे।।
मन हुलसत देखन्ह सो गाथा। दीखेउ नयन मांनु मन माथा।।
केहि कारन कृपा करि गंगा। लीन्ह प्रवास आश्रम संगा।।
मधुर वचन अनसूय सुनाये। नाथ करउ विश्वास बताये।।
दै कुछ तप फल हम तिन बांधा। होइ जो भूल तो हरु अपराधा।।
चलिय साथ तिन नयन निहारी। करु परतीत धरा हितकारी।।
देर न लागि मुदित मन मुनिवर। साथ आपु चल जहं गंगा घर।।
भले रहा गंगा लघु रूपा। पर तेहि अवसर परम अनूपा।।
गंगा दरसे पर्श नहाने। तरहिं तीन पुर पातक प्राने।।
ताहि दरस करि मुनिवर हरखे। सो सुख आउ जथा जल बरखे।।
कर जोरेउ मुनि पत्नी संगा। नमनत वन्दत स्तुति संगा।।
कह जेस कीन्ह कृपा लघु रूपा। करु प्रवास तेस आप स्वरूपा।।
युग युग पुरवहु स्वारथ आना। जेस मोहि दीन्ह नीर वरदाना।।
सुनि मुनि वचन गंग हरखाई। कह हम मानब तब वचनाई।।
जौ अनसूय बरस पति सेवा। तप भगती पूजित शिव देवा।।
देहि मोहि फल तौ करि बासा। देहुं वचन करु मन विश्वासा।।
लोक सती पति व्रत फल पावन। करइ जौन मम पाप नशावन।।
देहु जथा पावहु तेस मांगन। जौ भल चाह आप अरु आनन।।
इहि तजि जाब ठांव नहि आने। लेब मानि थायी स्थाने।।
अत्रि असूय सुनिय गंग बानी। लाग ढेर भल ह्रदय सुहानी।।

गंगा वाणी शर्त अस, अनसूया प्रिय मानि।
दोउ व्रतन बरस फल, देइ जग धन्य बखानि।।104।।

गंगा मांग वचन अनुसारे। अनसूया अर्पण करि डारे।।
थामिय गंगा आंचल ताने। बरसे सुमन देव भल माने।।

लोक हितारथ दोऊ जननी। कीन्हेउ जेस सो जाइ न बरनी।।
जौ पसरा तहं गंग प्रबासा। लगु जेस पूरक शिव अभिलासा।।
आशुतोष प्रभु भव अघ हारी। दीन उबारत करत सुखारी।।
कीन्ह महेश पांच मुख धारन। गंगा तटे आप अवतारन।।
शिव गंगा वन कामद मांही। अत्रिनुसूय तपे प्रगटाहीं।।
जैसे गंग हरइ अघ नाना। दरसे नाशहिं पाप महाना।।
तानुसार शंकर त्रिपुरारी। चित्रकूट बल करि भव तारी।।
सो अत्रीश्वर देव कृपाला। नाशहिं अघ अवगुन कलिकाला।।
बड़ अनवर्षण भवा समापन। जल बरसा बनु धरा हरापन।।
पावन तीरथ मुक्ति प्रदाता। थापा तहं अनसूया माता।।
करि करि आप तपोव्रत दाना। करहिं सदा जगती कल्याना।।
वन कामद पुरवहि जग आशा। बनु कारन मुनि भयउ पियासा।।
सो गंगा मन्दाकिनि नामा। लोग पुकारि करहिं प्रनामा।।
चित्रकूट सम धाम न आना। देहीं शास्त्र पुराण प्रनामा।।
पुरवहि सो थल मन अभिलासा। अस सुर मुनि करि गंग बकासा।।
तप तपसी बल ब्रह्म समाना। सुर नर सन्त भाखु विद्वाना।।

विश्व विदित अनसूय तप, महिमा परम पुनीत।
तिन पद चीन्हे जे चलइ, सो भव बाधा जीत।।105।।
तप महिमा अनकूत जग, तप ते बनु संसार।
तपसिन तप रांचत मिलै, लोके शिव अवतार।।106।।

शिव शकती व्यापइ तप मांही। पाइअ अवसर भव प्रगटाहीं।।
पोषण रक्षण रूप अघोरा। शिव संहार रूप तन घोरा।।
लिंग रूप शिव सृष्टि स्वरूपा। इहि ते पूजनीय भव कूपा।।
द्वादश लिंग अतुल प्रभुताई। लोके शिव अवतार कराई।।
भव शिव रुद्र शंभु मृड नामा। प्रगटावहिं महिमा वसुधामा।।
सृष्टि रचावन विधि उपदेशा। बनि नर नारी दीन्ह महेशा।।
अष्टमूर्ति छबि हेतु उपासन। भा भव वर्णित मुखे पुरातन।।
महाकाल भैरव यक्षादे। दुर्वासा हंसे पिपलादे।।
आदि वतारण भा जग जोई। ताते शिव कल्याण संजोई।।
पशुपति नीलकण्ठ नटराजा। जब शिव दक्षिण मूरति साजा।।
करत सुमंगल ज्ञान प्रदाना। नाशिय लोक अमंगल प्राना।।
भिक्षु मृत्युंजय बनि पंचानन। लीला विविध कीन्ह जग पालन।।
तानुसार कलिकाल विनाशन। आपु रचिय शिव पुनि प्रज्ञातन।।
जल शरणागत रक्षण तांई। ब्रह्म नाविका भव पौढ़ाई।।

करि उद्घोष बतावा एही।। आउ साथ जे होइ सनेही।।
पार उतारब प्रलय भय ते।। महाकाल बनि फिरत अभय ते।।
जिन तिन जाना कुछ पहिचाना।। दीन्ह सोई तिन जीवन दाना।।
भावी वक्ता बुद्ध अनुसारे।। लागत भा प्रज्ञा अवतारे।।
जासु प्रज्ञा वसुधा हितकारी।। परसइ ब्रह्म शकति चहुं वारी।।
आपु समान बनावइ आना।। होइ न केस सो शंभु समाना।।
रह कलि नाशी जीवन काजा।। बांटइ जप तप ध्यान समाजा।।
तासु प्रयोजन कृत उद्देशा। देव बनावन स्वर्ग प्रवेश।।
शिव समान आपन जग देई। रूप दक्षिणा अवगुण लेई।।
आपन देइ लेइ नहि आना। भूत भविष्यत गति वर्तमाना।।
करि अवलोकन करै सुधारन। मानन्ह योगे शिव अवतारन।।
योगेश्वर अवतार अनेका। अन्तर ताहि मांनु सब एका।।

अश्वमेघ के अश्व चढ़ि, कर कृपाण सदबुद्धि।
ब्रह्म शक्ति दै तीन पुर, करु जनमानस शुद्धि।।107।।

प्रज्ञा एक दोष बहु तेरे। लै प्रज्ञा बन नाशहि चेरे।।
रूप गृही जे शिव रस भोगी। सो कलि मांहि प्रज्ञा शिव योगी।।
जीवन महाकाल व्रत धारी। सकल योग शिव चलइ संभारी।।
करइ सिखावन शिव ऋषि भांती।। जप तप प्रज्ञा ऋषि औकाती।।
गुण एतिक लक्षण मिल जाके। मांनु रूप शिव दर्शन पाके।।
आन मान नहि कलयुग नाशन। बिनु साधे शंकर योगासन।।
सकइ न थापि नवल युग धरनी। भले कमावइ कोऊ करनी।।
भल बजाय अगुनी मन जीतइ। सोई नवयुग रेखा खींचइ।।
पर सेवी मन मति सतधारी। धर्म परायण वेद विचारी।।
जेहि अनुयायी जग इहि खानी। गनु तामे शिव शक्ति भवानी।।
विधि विधान कलियुग संहारी। करु भावी पीढ़ी संसकारी।।
रह जीवन दुष्वृत्ति संग्रामा। मांनु शिवांश ताहि वसुधामा।।
प्रज्ञावतारण करनी जेती। सब संग सोह देव ऋषि खेती।।
ताहि जगत शिव आपु बतावा। प्रभु प्रज्ञा सो बांटि पसावा।।
नाशा धर्म हीन बलि करनी। करि बड़ यज्ञ दीन्ह सुख धरनी।।
जेहि विधि भागु दोष अघ जग के। करि कराइ प्रज्ञेश्वर चलि के।।
घटना क्रम जीवन आचारा। पूर मनोमय योगाचारा।।
ऋषि पथ गामी हिम थलवासी। बनि वसुधा ब्रह्म शक्ति विकासी।।
इहि ते श्रीराम जग मांही। कल्कि रूप अवतार जनाहीं।।
ध्यान योग जप जोग बतावत। तप बल तासु शिवम पद गावत।।

मंगलमय गुरुदेव वच, जनपद नगरी ग्राम।
पहुंचि स्वच्छ करि लोकमन, बांटि शान्ति विश्राम।।108।।
गो ब्राह्मण सुर पाउ सुख, जाके नियम निधान।
योगेश्वर अवतार शिव, इहि कारन जग मान।।109।।
महामंत्र करि साधना, महामृत्युंजय जाप।
जाइ तपायहु आपु हिम, तौ मिलु शिव प्रताप।।110।।
ऊँ प्रवाचक रूप शिव, वेद तत्व सुख सार।
अखिल विश्व जीवन मरण, दाता बनि करतार।।111।।

सर्व रूप शिव विश्व स्वरूपा। परमानन्द तीन पुर भूपा।।
नाशक पालक पोषक करनी। आपुहि करइ रूप धै धरनी।।
सर्व देवमय परमानन्दा। गंगा धार माथ शशि चन्दा।।
जे भव कूप गिरै भहराई। तेहि थामहि माता पितु नांई।।
अघ भय तम हर सम रवि प्राता। ज्योतिर्मय रक्षक जग गाता।।
सूक्ष्म सूक्ष्मतर अन्तरयामी। प्राण शक्ति मय त्रय पुर स्वामी।।
ताप तीन आंधी तूफाना। दावानल व्यापक भव नाना।।
वृत्ति आसुरी मति कलिकाला। कोप प्रकृति चाल भूचाला।।
निशिदिन वन तरु जल जिव प्रानी। लोक मितारि लाभ अरु हानी।।
सुर नर दानव जग जित काया। नाथ तुम्हारिन सर्वस माया।।
व्याध व्याधि दुःख दारिद रोगा। भव भय भूत तुम्हारउ योगा।।
मारि महामारी बीमारी। सकल निवारी तुम निरमारी।।
ठग बटमार असुर आतंकी। कहं तुम ते कोऊ बल बंकी।।
ताप शीत भव वर्षा रूपा। जगत तत्व तुम आप अनूपा।।
नाम सुने कांपहि यमराजा। पुरवहु नाथ मनोरथ काजा।।
जेहि विधि बनइ सुखी तन प्राना। देहु सो इहि पल कृपानिधाना।।
काया सहित अंग प्रति अंगे। तुमहिं समर्पित हर हर गंगे।।
आन मान कछु ज्ञान न ध्याना। जानउं स्वारथ भाव सुनाना।।
जौ तुम्हार सब रूप गोसांई। तौ हमहूं शरणागत नांई।।
जन शरणागत होहिं अभीता। पाइअ कोरा जौ जग हीता।।

जल ते रक्षा शिव करहिं, महि ते मूर्ति गिरीश।
काल रुद्र दावानले, रक्षहि जो भय बीस।।112।।

रक्षहिं पूरब दिशा निरन्तर। तन तत्पुरुष चतुर्मुख शंकर।।
सो दिशि दक्षिण नाम अघोरे। सद्योजात पाछु दिशि ओरे।।
वाम देव दिशि उत्तर रक्षेउ। कलुष कुचार दोष भव भक्षेउ।।
परम तत्वमय पचमुख आनन। रक्षहिं ऊपर दिशि ईशानन।।

आग्नेय शिव पावक धारी। वायव्य कोण रूप त्रिपुरारी।।
रक्षहिं नैऋत्य कोणे वैसे। खींचु लगाम सारथी जैसे।।
ऊपर नीच दिशा चहुं वारी। करहिं सुरक्षा डमरू धारी।।
नयन नासिका छबि विश्वनाथे। चन्द्र मौलि तन शीश समाथे।।
कान कपोलन रूप कपाली। रक्षहिं पंचमुखी जिभ लाली।।
नील कण्ठ गल हाथ पिनाकी। वक्ष कांध जहं वरनत बाकी।।
महादेव वृषभध्वज धारी। सुनहि विनय करहीं रखवारी।।
ब्रह्म रूप शिव भव उर बासी। रक्षक वरुण रूप अविनाशी।।
केश जटीश्वर जंघ जगदीश्वर। सुर मुनि वन्दित मूल समीश्वर।।
आठों याम दिवस निशि अवसर। गौरीपति गंगे शशि शेखर।।
कान नयन सुर ज्योति समाना। रक्षहिं तेहि शंकर भगवाना।।
रक्षहिं मृत्यु मृत्युंजय शकती। बाहर भीतर पशुपति भगती।।
हाथ त्रिशूल हृदय संरक्षक। नाभी नगरी पार्वती तक।।
अंग जौन वन्दउ जिन नामा। रक्षकु मोर करत प्रनामा।।
सोवत जागत बैठत गमने। कुल परिवार मीत जे अपने।।
योगेश्वर भैरव बलकारी। वन्दउं बनु संरक्षण कारी।।
गिरि पहाड़ दुर्गम स्थाना। जौन देइ भय दुख अपमाना।।
शंकर सर्वस दोष दुराहीं। करि रक्षा राखहिं सुख माहीं।।
जौ अरि सेन घिरित बनु गाता। उपजइ भीति कुठाराघाता।।
वीर भद्र शिव मृडे स्वरूपा। रक्षहिं मात पिता अनुरूपा।।
त्रिपुरान्तक प्रलय अनुहारी। दुष्ट दोष दुःख देहु निवारी।।
हिंसक जीव जन्तु जग जेते। ताते रक्षहिं कृपानिकेते।।
विष भय व्यसन ग्रह प्रद पीरा। अवसर मरणासन्न शरीरा।।
मृत संजीवन स्वर परु काने। रक्षा करहिं मृत्युंजय प्राने।।
सरल तुमहि अपशकुन मिटावन। आधि व्याधि दुःख दोष दुरावन।।
अपयश हानि लोक उत्पाता। छिन्न करहिं शिव विश्व विधाता।।
भोले नाथ दिग्म्बर धारी। देहीं मौत अकाल विदारी।।
कालक काल महाकालेश्वर। काल गाल जब फंसउं सुरेश्वर।।
धरि कोउ रूप रखायउ प्राना। पाठ कवच अस प्रद वरदाना।।
नाहि जांनु कछु महिमा माया। पर बिनु तुम रक्षहिं को काया।।
जेहि विधि होइ नाथ हित मोरा। करउं सो वेगि मने मति बोरा।।
भव भय गंजन सब दुख भंजन। लेहु उबारि सुने इहि वन्दन।।

व्यापक ब्रह्म स्वरूप शिव, अलखनिरजंन रूप।
मुण्डमाल गल गरल धर, विश्व त्रात अनुरूप।।113।।

योगी भोगी मुक्तिप्रद, दुर्लभ करत सुतार।
मन स्वभाव वन्दन सुनत, बनि जावत रखवार।।114।।
काल काल विकराल शिव, महाकाल गिरिराज।
सकल यातना नाश करि, भय भगाउ यमराज।।115।।

रत्नसानु शरासनं रजताद्रिश्रृंगनिकेतनं,
शिंजनीकृतपन्नगेश्वरमच्युतानलसायकम्।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशालयैरभिवन्दितं,
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।1।।
पंचपादपपुष्पगन्धिपदाम्बुजद्वयशोभितं,
भाललोचन जातपावकदग्धमन्मथविग्रहम्।
भस्मदिग्धकलेश्वरं भवनाशिनं भवमव्ययं,
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।2।।
मत्तवारणमुख्यचर्मकृतोत्तरीय मनोहरं,
पंकजासनपद्मलोचनपूजिताङ्घ्रिसरोरुहम्।
देवसिद्धतरंगिणीकरसिक्तशीतजटाधरं,
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।3।।
कुण्डलीकृतकुण्डलीश्वरकुण्डलंवृषवाहनं,
नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम्।
अन्धकान्तकमाश्रितामरपादपं शमनात्मकं,
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।4।।
यक्षराजसखं भगाक्षिहरं भुजंगविभूषणं,
शैलराजसुतापरिष्कृतचारुवाम कलेवरम्।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं,
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।5।।
भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं,
दक्षयज्ञ विनाशिनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम्।
भुक्तिमुक्तिफलप्रदं निखिलाघसंघनिवर्हणं,
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।6।।
भक्त वत्सलमर्चतां निधिमक्षयं हरिदम्बरं,
सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनूपमम्।
भूमिवारिनभोहुताशन सोमपालितस्वाकृतिं,
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।7।।

विश्व सृष्टिविधायिनं पुनरेव पालन तत्परं,
संहरन्तमथ प्रपंचमशेषलोक निवासिनम्।
क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथसमावृतं,
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।8।।
रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठमुमापतिम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।9।।
कालकण्ठं कलामूर्तिं कालाग्निं कालनाशनम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।10।।
नीलकण्ठं विरूपाक्षं निर्मलं निरुपद्रवम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।11।।
वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।12।।
देवदेवं जगन्नाथं देवेशमृषभध्वजम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।13।।
अनन्तमव्ययं शान्तमक्षमालाधरं हरम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।14।।
आनन्दं परमं नित्यं कैवल्यपदकारणम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।15।।
स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।16।।
देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपंकजं,
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे।।1।।
भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं,
नीलकण्ठमीप्सितार्थ दायकं त्रिलोचनम्।
कालकालमम्बुजाक्षमक्ष शूलमक्षरं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे।।2।।
शूलटंकपाशदण्डपाणिमादिकारणं,
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम्।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे।।3।।
भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारु विग्रहं,
भक्तवत्सल स्थितं समस्त लोकविग्रहम्।
विनिक्कणन्मनोज्ञहेमकिंकिणीलसत्कटिं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे।।4।।

धर्मसेतु पालकं त्वधर्ममार्गनाशकं,
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम्।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभितांग मण्डलं,

काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे।।5।।
रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं,
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरंजनम्।
मृत्यु दर्पनाशनं करालदष्ट्रमोक्षणं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे।।6।।
अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिः,
दृष्टिपातनष्टपाप जालमुग्र शासनम्।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे।।7।।
भूतसंघ नायकं विशालकीर्तिदायकं,
काशिवासलोकपुण्य पापशोधकं विभुम्।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे।।8।।
कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं,
ज्ञानमुक्ति साधनं विचित्रपुण्यवर्धनम्।
शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं,
ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसंनिधिं ध्रुवम्।।9।।

महामृत्युंजय भैरवी, पाठ निरन्तर ध्यान।
सहित श्रद्धा जे जन करहिं, पावहिं शिव वरदान।।116।।
रोग शोक भव ताप हर, विषहर शक्ति समात।
तेज ओज अस तन बसत, देखि दोष बगिलात।।117।।
जटा गंग माथे शशी, गोदी सोह गणेश।
वाम उमा स्कंध संग, हृदय बसहु सर्वेश।।118।।

इति श्रीमद्शिव शक्ति कथायां
सकल कलिकलुषविध्वंसने पंचम अध्यायः
;देव खण्डः समाप्तःद्ध